भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में पालीवाल ब्राह्मण समाज का योगदान

-ऋषिदत्त पालीवाल (कुलधर)

स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित

कृष्ण दत्तजी की स्मृति में
आगरा स्थित पालीवाल पार्क
में आदमकद प्रतिमा।

फलोदी के पास जालोड़ा गांव में
श्री तुलसीरामजी (पिथड़)पालीवाल के
प्रयासों से श्री टीकाराम पालीवाल
राजस्व गांव और प्रतिमा।

जैसलमेर मुख्यालय पर विशाल टीकाराम पालीवाल स्मृति पार्क

।। ॐ श्री हनुमते नमः ।।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में पालीवाल ब्राह्मण समाज का योगदान

☀☀☀☀☀

संकलनकर्त्ता

ऋषिदत्त मोहनलाल पालीवाल (कुलधर)

B.A.M.B.A.(HR)

प्रकाशक :

माँ शारदा गृह पुस्तकालय
जैसलमेर ।

सर्वाधिकार © :

लेखक व प्रकाशक के अधीन सुरक्षित

मुद्रक :

कृष्णा ऑफसेट
जोधपुर ।

प्रथम संस्करण :

प्रतियां – 1000
विक्रम संवत् 2078
ईस्वी सन् 2021

मूल्य 65/-

पूर्व प्रकाशन :

पालीवाल ब्राह्मण वंशावली
(पोकरण–फलोदी क्षैत्र)
लेखक – श्रीमान् मोहनलालजी पालीवाल (कुलधर)
प्रकाशन वर्ष 14 सितम्बर, 2012

प्राप्ति स्थान :

696ए, स्वामी विवेकानंद पार्क के पास,
इंदिरा कॉलोनी, जैसलमेर (राज.)
पिन 345001

☀☀☀☀☀☀☀☀☀☀

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पेज
1.	वंदना	1
2.	लेखक की कलम से....	4
	राष्ट्रीय स्वतंत्रता सेनानी एवं पालीवाल समाज के गौरव	
3.	संत कृपालुदेवजी महाराज	8
4.	पंडित कृष्णदत्तजी पालीवाल आगरा	11
5.	श्रीमती सुखी देवी पत्नी पं. कृष्णदत्तजी	16
6.	श्री टीकाराम पालीवाल प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री राजस्थान	17
7.	श्री मीठूलाल पालीवाल	23
8.	पंडित किशोरलाल	24
9.	पंडित रामचन्द्र पालीवाल	26
10.	श्री जीवाराम पालीवाल	28
11.	श्री विष्णुदयाल पालीवाल सुल्तानपुर	30
12.	क्रांतिकारी चिरंजीलाल पालीवाल बुलंदशहर	31
13.	मरूभूमि जैसलमेर के सपूत पंडित ब्रह्मदत्त पालीवाल	32
14.	पश्चिमी राजस्थान के लाल पृथ्वीसिंह पालीवाल	34
15.	साहित्यकार हरिदत्त पालीवाल ''निर्भय''	36
16.	आगरा का लाल प्रेमदत्त पालीवाल	38
17.	दिल्ली का लाल, पंडित चिरंजीलाल	39
18.	सेहुद वाले पंडित चिरंजीलाल	41
19.	पंडित रामनारायण पालीवाल सलेमपुर	42
20.	श्री देवदत्त पालीवाल आगरा	43
21.	पंडित माधोनारायण मुद्‌गल	43
22.	श्री हरनारायण पालीवाल	43

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पेज
23.	पंडित रामेश्वरदत्त पालीवाल रोहतक	44
24.	पंडित रामप्रसाद पालीवाल	44
25.	पंडित दयाराम पालीवाल	45
26.	पंडित सुंदरलाल पालीवाल	45
27.	मास्टर मदनलाल पालीवाल	45
28.	पंडित लक्ष्मीदत्त पालीवाल	45
29.	पंडित चन्द्रभान पालीवाल जटोला वाले	46
30.	पंडित ताराचंदजी पालीवाल अकोला वाले	46
31.	पंडित माधोराम पालीवाल	46
32.	वैद्य पंडित भवानीशंकर पुरोहित	47
33.	श्री नंदलाल जोशी	47
34.	पंडित शंकरदेवजी भारतीय	47
35.	श्री रघुनाथजी जोशी	47
36.	श्री नारायणदासजी बागोरा	47
37.	श्री राधाकृष्णजी कटारा	47
38.	काव्य श्रद्धांजलि	48

☀☀☀☀☀☀☀☀☀☀

वंदना

जय स्वतंत्रते । जय स्वतंत्रते,
जय जय जय, नव भारत हे !
जयति जयति जय जन्म भूमि जय,
जय जय राष्ट्र पताका हे !!
जय जय जननी के अनगणित,
सुत जिन अपना सर्वस्व वारा।
श्रद्धा से मस्तक झुकता यह,
जय वीरों माता के हे !!

पालीवाल ब्राह्मण समाज के स्वतंत्रता सेनानी

संत कृपालुदेवजी महाराज

पण्डित कृष्णदत्त पालीवाल

श्रीमती सुखी देवी पालीवाल

श्री टीकाराम पालीवाल

श्री मिठूलाल पालीवाल

श्री किशोरलाल पालीवाल

पण्डित रामचन्द्र पालीवाल

श्री जीवाराम पालीवाल

श्री विष्णुदयाल पालीवाल

पण्डित ब्रह्मदत्त पालीवाल

श्री पृथ्वीसिंह पालीवाल

पालीवाल ब्राह्मण समाज के स्वतंत्रता सेनानी

श्री हरिदत्त पालीवाल 'निर्भय'

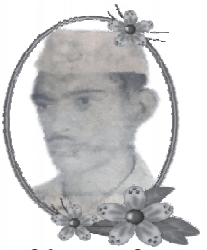

श्री प्रेमदत्त पालीवाल

पण्डित चिरंजीलाल पालीवाल

पण्डित रामनारायण पालीवाल

पण्डित माधोनारायण मुद्गल

श्री हरनारायण पालीवाल

पण्डित ताराचन्द पालीवाल

पण्डित लक्ष्मीदत्त पालीवाल

पण्डित चतुर्भज शर्मा

पण्डित धर्मेन्द्र मुन्धा

पण्डित बद्रीप्रसाद पालीवाल

राष्ट्र कवि रामधारीसिंह दिनकर के उद्‌गार.....

जला अस्थियां बारी–बारी, चिटकाई जिनमें चिंगारी।
जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर, लिए बिना गर्दन का मोल।
कलम, आज उनकी जय बोल.....
जो अगणित लघु दीप हमारे, तूफानों में एक किनारे,
जल जलाकर, बुझ गए किसी दिन, मांगा नहीं स्नेह मुंह खोल।
कलम, आज उनकी जय बोल.....
अंधा चकाचौंध का मारा, क्या जाने इतिहास बेचारा,
साक्षी है उनकी महिमा के, सूर्य–चन्द्र, भूगोल खगोल।
कलम, आज उनकी जय बोल.....

लेखक की कलम से.....

तेजस्वी सम्मान खोजते नहीं, गोत्र बतलाके,
पाते है जग में प्रशस्ति, अपना करबत दिखलाके।
हीन मूल की ओर देख जग, गलत कहे या ठीक।
वीर खींचकर ही रहते हैं, इतिहासों में लीक।

यह सही है की वीर पुरूष अपना सम्मान जाति के बल पर प्राप्त नहीं करते। संसार के लोग गलत कहें या ठीक इस पर भी विचार नहीं करते। अपितु वह अपने वीरत्व के बल पर अपना इतिहास लिखते या बनाते है। परन्तु यह भी सही हैं कि जिस जाति में ऐसे वीर महापुरूषों के इतिहास को भूला दिया जाता हैं, उस जाति का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है।

पालीवाल ब्राह्मण जाति का इतिहास अत्यन्त ही गौरवशाली रहा हैं। पालीवाल समाज के उद्‌गम स्थल रहे पाली और जैसलमेर के सैकड़ों सालों के इतिहास ने जातीय संगठन की एकता की मिशाल कायम करते हुए अन्य जातियों के लिए उदाहरण बना है। परन्तु यहाँ यह लिखना उचित समझता हूं कि यदि आज से 90 साल पहले जुलाई 1931 से मई 1932 के बीच समाज के

महामानव पंडित शिवनारायण पालीवाल अपने घर से नहीं निकले होते और परिस्थितियां प्रतिकूल होने के बावजूद पालीवाल समाज के इतिहास को संकलित कर उसे अपनी लेखनी में नहीं ढाला होता तो आज की तारीख में पालीवाल समाज का इतिहास किवदंती बनकर रह जाता।

स्वतंत्रता संग्राम में पालीवाल समाज के योगदान को याद करने से पहले यह लिखना उचित समझता हूं कि ज्ञात जानकारी के अनुसार ईस्वी सन् 524 से 1291–92 तक पालीवालों का मूल निवास राजस्थान का पाली मारवाड़ रहा है । ईस्वी 1291 मे पाली मारवाड़ पर जलालुदीन खिलजी के आक्रमण के बाद हुए नरसंहार व जाती स्वाभिमान की रक्षा के लिए हमारे पूर्वजों ने अपने आपको युद्ध में झोंक दिया और हजारों की संख्या में हमारे पूर्वज वीरगति को प्राप्त हुए। फिर पाली से पलायन कर सुरक्षित जगह जैसलमेर रियासत व अन्य प्रदेशों में चले गये। जैसलमेर रियासत में करीब 600 साल के काल खण्ड में समृद्धि के चरम पर पहुंचे। परन्तु परिस्थितिवश 84 गांव जातीय स्वाभिमान को सर्वोपरि मानते हुए एक ही रात में खाली कर संपूर्ण भारतवर्ष में बस गये।

अंग्रेजो के शासनकाल में पालीवाल समाज के लोग भारत के कई राज्यों में बस गये। जब गांधीजी ने स्वतंत्रता आंदोलन में आहूति देने के लिए जनता से आह्वान किया तो पालीवाल ब्राह्मण जाति के वीर सपूतों ने जिनकी रग–रग में राष्ट्र प्रेम व स्वाभिमान का खून रहा हैं, उन्होंने भी स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

लेखक जब–जब भी स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में पुस्तकें पढता, गूगल पर सर्च करता तो भारतवर्ष के स्वतंत्रता सेनानियों की सूची में उसे पालीवाल समाज के वीरों के नाम नहीं दिखते। अन्य समाज के स्वतंत्रता सेनानियों की पुस्तकें लिखी हुई पढ़ी। तब मन को पीड़ा पहुंची कि पालीवाल समाज के स्वतंत्रता सेनानियों का इतिहास समाज के सामने क्यों नहीं लाया गया। यह भी कड़वा सच है कि आज राजनीति में जिन जातियों ने राजनीतिक दलों को मजबूर किया, उन्होंने उनके वीर सपूतों के गीत गाये,

अन्यथा हजारों स्वतंत्रता सेनानियों का इतिहास और उनका बलिदान अंधेरे में रखी गयी वस्तु के समान लुप्त हो गया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पालीवाल ब्राह्मण समाज के योगदान की बात करें तो सन् 1947 में आगरा से प्रकाशित **पालीवाल संदेश** द्वारा समाज के स्वतंत्रता सेनानियों का जीवन वृतांत प्रकाशित किया गया, जो साधुवाद के पात्र है। लेखक का यही भाव रहा है कि लगभग 73 साल में तीन पीढियां बीत गयी। आज के युवा के सामने पालीवाल ब्राह्मण समाज के वीर सपूतों का स्वतंत्रता संग्राम में क्या योगदान रहा, बहुत ही कम जानकारी हैं। लेखक ने **सितम्बर, 2010** में **पालीवाल जागृति संदेश त्रैमासिक पत्रिका** में सर्वप्रथम पालीवाल समाज के वीर सपूतों के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान को संकलित कर ''विशेषांक'' के रूप में प्रकाशित करवाया था, परन्तु यह पुस्तक भी जो–जो सदस्य थे उन तक ही पहुंच सकी।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पालीवाल ब्राह्मण समाज का योगदान पुस्तक मेरे द्वारा प्रकाशित करने का विचार इसी संदर्भ में आया की युवा पीढी के सामने हमारे समाज के वीर सपूतों का देश के प्रति समर्पण व सेवा भाव को सामने लाया जा सके, ताकि युवा पीढी यह अनुभव करें कि हमारे समाज ने अपने जातीय स्वाभिमान ही नहीं, अपितु राष्ट्र निर्माण में भी अहम योगदान देकर पालीवाल ब्राह्मण समाज के गौरव को बढाया हैं।

लेखक को जिन स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में जानकारी सुलभ हो सकी, उनका जीवन वृतांत प्रकाशित किया जा रहा हैं। मेरे द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से भी समाज सदस्यों से समाज के स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में जानकारी भिजवाने के लिए निवेदन किया गया था, परन्तु अफसोस जैसे विचार सोशल मीडिया पर समाजजनों के समाज के इतिहास को लेकर आते हैं, वैसा सकारात्मक सहयोग नहीं दिखा। खैर, कोई बात नहीं। सुलभ जानकारी के आधार पर समाज के स्वतंत्रता सेनानियों का जीवन परिचय सबके सामने लाने का छोटा सा प्रयास कर रहा हूँ। ताकि हम इनसे प्रेरणा लेकर समाज और राष्ट्र सेवा के लिए प्रेरित हो सकें और पालीवाल ब्राह्मण

समाज के वीर सपूतों की गौरव गाथा पढ़कर गर्व कर सकें। इन वीर सपूतों के वीरत्व और स्वतंत्रता संग्राम में योगदान को घर–घर पहुंचाकर उनको सदैव याद रखना ही हमारी सच्ची श्रद्धांजली होगी।

समाज के जिन–जिन वीर सपूतों ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया, परन्तु उनका जीवन वृतांत जानकारी के अभाव में प्रकाशित नहीं कर पा रहा हूँ अथवा जिन स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में लिखने का प्रयास किया गया हैं, यदि उसमें कुछ जानकारी के अभाव में रह गया है तो उसके लिए उन पुण्यात्माओं और उनके परिवारजन से क्षमा चाहूंगा। मेरा यह छोटा सा प्रयास **स्वतंत्रता आंदोलन में पालीवाल ब्राह्मण समाज के योगदान** को समाज पटल पर सामने लाने का हैं, ताकि युवा पीढी भी हमारे पूर्वजों के स्वतंत्रता आंदोलन में सहयोग की वीरगाथायें पढ़कर गौरवान्वित हो सके। हम सब उनसे प्रेरणा लेकर राष्ट्र उत्थान व समाज सेवा के लिए सदैव अनवरत कार्य कर सकें, यही उन वीर सपूतों को सच्ची श्रद्धांजली होगी ।

ऋषिदत्त मोहनलाल (कुलधर) पालीवाल
जैसलमेर
मो. 9414391041

संत कृपालुदेवजी महाराज

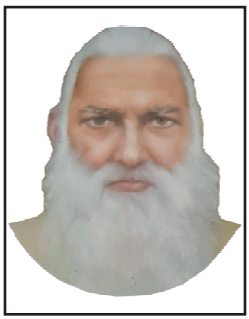

श्री कृपालुदेवजी महाराज का जन्म उदयपुर (राज.) जिले के ग्राम सेमटाल ब्रह्मपुरी में **पालीवाल परिवार के पंडित चतुर्भुज के यहाँ हुआ।** संवत् 1930 में बदलाग्राम व उदयपुर में प्रारंभिक शिक्षा ली। नौ साल की आयु में यज्ञोपवित धारण करके अपनी आध्यात्मिक एवं शैक्षिक यात्रा हरिद्वार से प्रारंभ की। सोलह वर्ष की आयु में काशी पहुंचे। निरंतर शिक्षा, साधना, तपस्या अनेक प्रयोगों में सफल **योगी नंदकिशोर, फिर यती किशोरचंद और अंत में स्वामी कृपालुदेवजी महाराज** के नाम से प्रसिद्ध हुए। सन् 1968 में इनका देहावसान हो गया। इनकी साधना व जीवन यात्रा पर प्रकाश डालने वाले 640 पेज के ग्रंथ का लेखन **''पाराशर''** द्वारा हुआ व प्रकाशन गंगेश्वरी प्रिंटिंग प्रेस चावड़ी बाजार, देहली से हुआ।

जीवन वृतांत :–

वर्तमान में दिव्य योग मंदिर ट्रस्ट जिसका मुख्यालय कृपालु बाग आश्रम में अवस्थित है, जिसके वर्तमान संस्थापक श्री योगगुरू बाबा रामदेवजी है। उक्त कृपालुबाग की स्थापना 1932 में **पालीवाल समाज के गौरव, क्रांतिकारी पुरूष स्वामी श्री कृपालु महाराजजी** ने की थी, जिन्होने एक सक्रिय राष्ट्रीय क्रांतिकारी की सफल भूमिका निभायी थी। हरिद्वार में वे अनेक क्रांतिकारियों के आश्रयदाता थे। यति किशोरचंद ने हरिद्वार में सबसे पहली पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना की व अथक प्रयास से साढे तीन हजार पुस्तको का संग्रह भी किया। आपने राष्ट्र निर्माण योजना को मूर्त रूप देने के लिए दर्जनों पाठशालाओं की स्थापना की। गुरूकुल कांगडी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानंदजी से आपके मधुर संबंध थे। बाद में बाल गंगाधर तिलक, मदनमोहन मालवीय, मोतीलाल नेहरू, महात्मा गाँधी, चितरंजनदास, गणेशशंकर विद्यार्थी, वी.जे. पटेल, अजमलखां के गहन सम्पर्क में थे।

किशोरचंद पालीवाल ने वंग विप्लव दल से जुडकर इसके द्वारा निकाले गये **युगांतर** व **लोकांतर** पत्रों का उत्तर भारत में प्रसारित करने का जोखिम भरा दायित्व संभाला। किशोरचंद इन पत्रों को कभी हरिद्वार के

चण्डी पहाड़, कभी नीलधारा की तलहटी, तो कभी **पालीवाल धर्मशाला** हरिद्वार स्थित अपनी लाईब्रेरी से लिफाफों में रख–रखकर देश भर में पोस्ट किया करते थे। इन्ही दिनों वंग विप्लव दल ने दिल्ली में लार्ड होर्डिंग्स बमकाण्ड को अंजाम दिया व उसके नायम **रास बिहारी बोस** पर ब्रिटिश सरकार ने उस जमाने में तीन लाख रू. का इनाम रखा था।

किशोरचंद ने उनको जंगल के बीच अपने आश्रम में रखा। छापे की भनक पड़ने पर किशोरचंद ने उनको पटियालवी वेश में देहरादून एक्सप्रेस में बनारस रवाना कर दिया। सवेरे ही भारी पुलिस बल द्वारा किशोरचंद की कुटिया को घेरकर तलाशी ली गयी, परन्तु शेर पिंजरे से बाहर निकल चुका था और रास बिहारी बोस जापान सुरक्षित जा चुके थे।

यही यति **किशोरचंद पालीवाल**, सन्यास लेकर बाद में **कृपालु महाराज** कहलाये। स्वाधीनता की अलख जगाने के लिए इनके द्वारा **''विश्वज्ञान''** नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी किया गया। सन् 1968 में आप संसार को अलविदा कर गये।

इस प्रकार क्रांति, योग–साधना व अध्यात्म की पुण्यभूमि कृपालु बाग का संचालन कार्य महाराज के शिष्यों ने संभाला व उन शिष्यों में स्वामी श्री शंकरानंदजी थे व उनके योग **शिष्य श्री रामदेवजी** ने इस आश्रम को योग, आयुर्वेद, वैदिक संस्कृति की दिव्य ज्योति से आलोकित कर विख्यात कर दिया।

हमें गर्व है कि, **हमारे पालीवाल समाज के ही महापुरूष** और राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए अग्रणी रहे यति किशोरचंद जो कि महान क्रांतिकारी और कृपालु महाराज के रूप में योगगुरू रहे व उनके स्थापित आश्रम मे दीक्षित शिष्य श्री रामदेवजी योगगुरू के रूप में आज विश्वविख्यात है।

राष्ट्रीय क्रांतिकारी कृपालु महाराज के संदर्भ में योगगुरू स्वामी रामदेवजी के विचार

क्रांति के अग्रदूत, महान स्वतंत्रता सेनानी जिनका सर्वस्व देश, धर्म व संस्कृति की सेवा के लिए समर्पित था, अंग्रेजी दासता से भारत माता को मुक्त कराने हेतु परतंत्र भारत में जिन्होने स्वतंत्रता की उद्घोषक **''विश्वज्ञान'' मासिक पत्रिका** का संचालन व प्रकाशन कर अमर हुतात्मा, वीर शहीद क्रांतिकारियों को एकता के सूत्र में बांधा व युवाओं को अपना जीवन राष्ट्रहित

हेतु समर्पित करने का संदेश दिया। लार्ड हार्डिंग बम कांड के मुख्य आरोपी रास बिहारी बोस जैसे वीर क्रांतिकारी ने संकट के दिनों में नि श्रद्धेय स्वामीजी का आश्रय लिया। जिनका संपूर्ण जीवन भगवत आराधना, योग साधना व राष्ट्रदेव की सेवा में समर्पित था। उन पूज्यपाद **राष्ट्रसंत श्री कृपालुदेवजी महाराज द्वारा सन् 1932 में संस्थापित इस कृपालु बाग आश्रम में स्थित दिव्य योग मन्दिर** के मुख्य लक्ष्य आरोग्य, अध्यात्म एवं शिक्षण आदि सेवा कार्यों को करते हुए मैं ब्रह्मलीन संत की पावन स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

राष्ट्रीय स्वतंत्रता सेनानी पण्डित कृष्णदत्त पालीवाल

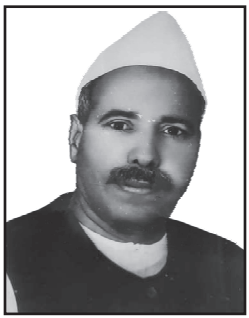

संसार में ईश्वरीय प्रेरणा से ऐसे प्रतिभाशाली मनुष्यों का जन्म हुआ करता है जो साधारण श्रेणी के मनुष्यों से उच्चासन पर सुशोभित होते है। वे अपने कार्यों द्वारा सदैव दूसरों को आकृष्ट करते रहते है। पालीवाल समाज भी ऐसे महान व्यक्तियों से अछूता नहीं है। यह कहते हुए हमें गर्व है कि उत्तरप्रदेश के प्रतिष्ठित नेता ''पालीवालजी''—का व्यक्तित्व भारत में नहीं, बल्कि अन्य देशों में भी विद्यमान था। अंग्रेजी अफसर या विद्वान जो भारत में कुछ भी दिनों रहे, इनकी तुलना बडे नेताओं में त्याग एवं तपस्या के बल पर करते है। यह बात निर्विवाद सत्य है कि, ''पालीवालजी'' के समान कोई व्यक्ति हमारे समाज में राजनैतिक क्षैत्र में अवतरित नहीं हुआ।

मंझोला कंद, पुष्ट देह और गेहुंआ रंग। स्वच्छ खादी की धोती, बंगलीकट कुरता व ऊपर जवाहर कट जॉकेट, जाज्वल्यमान आनन आजीक्सी आकर्षण भरी चमकीली आँखे, लम्बी—लम्बी बाहें व पतले किन्तु अभिव्यक्ति शील होंठ। आत्म गौरव की स्मृतिया जगा देने वाला गंभीर चरण निक्षेप सामाजिक विश्रंखलाओं की करूणा दशा के प्रति सक्रिय सहानुभूति रखने वाला हृदय, समानता व लोक कल्याण अहिंसा और त्याग का सात्विक क्रोध और निष्ठुर कार्य शीलता का आदर्शवाद और तक्षण निर्णय शक्ति का साकार रूप—यह पंडित **श्री कृष्णदत्त पालीवाल** ही थे।

आपका जन्म वि. संवत् 1951 (श्रावणी) को उत्तर प्रदेश राज्य के आगरा जिले की सदर तहसील के तनौरा ग्राम में हुआ था। दुर्भाग्य से आप डेढ साल की उम्र में ही मातृस्नेह से वंचित हो गये। आपके पिता पंडित बृजलाल पालीवाल ने ही आपका पालन—पोषण और कोमल भावनाओं का संरक्षण किया।

आपमें सार्वजनिक सेवा के भाव विद्यार्थी जीवन से ही रहे। एम.ए.

करने के बाद जब आप एल.एल.बी. की अन्तिम परीक्षा देने प्रयाग जा रहे थे, उस समय स्वर्गीय गणेश शंकर विद्यार्थी को संकट में फंसा देख – कानपुर रूक गये व फिर उक्त परीक्षा को ठोकर मारकर दैनिक व सप्ताहिक **''प्रताप''** तथा **''प्रभा''** के मुद्रक प्रकाशक व संपादक हो गये। उक्त पत्रों की लगभग तीन साल सेवा करने के उपरान्त आप उनसे सितम्बर 1923 से विलग हो गये और इसी वर्ष के अंत तक कानपुर और फतहपुर में कांग्रेस स्वराज पार्टी की ओर से चुनाव में संलग्न रहे।

आप सन् 1924 में उत्तरप्रदेश लेजिस्टलेटिव असेम्बली के सदस्य बनकर आगरा वापिस आये व सैनिक के दैनिक व सप्ताहिक संस्करण निकालना प्रारम्भ किया जो लोकसेवा और बलिदानों की दृष्टि से समाचार पत्रों में सर्वोपरि स्थान रखता है।

सन् 1937 में कांग्रेस की ओर से जो केन्द्रीय और प्रांतीय लडे गये थे, उनमें आप केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य व जिला बोर्ड के चेयरमेन चुने गये। प्रांतीय सरकार ने आपको रूरल डवलमेण्ट अधिकारी नियुक्त किया। बाद में महायुद्ध छिड जाने पर सैद्धान्तिक मतभेद से कांगेस मंत्रिमण्डल भंग हो गये। फरवरी, 1940 में आप प्रांतीय काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मनोनित किये गये, किन्तु कांग्रेस मंत्रिमण्डल भंग हो जाने से 1942 तक कांग्रेस के इतिहास में सक्रांति काल रहा है। आप प्रांतपति चुने जाने के बाद **1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में गिरफ्तार होने वाले प्रांत के प्रथम कांग्रेसी सेनानी थे।** सन् 1942 में बंदी जीवन से मुक्त होते ही आपने जन क्रांति के लिए पांचजन्य संभाला और क्रांति के अनुरूप लोकमत तैयार करके विश्रंखलित शक्तियों को संगठित किया।

सन् 1942 की ऐतिहासिक जन क्रांति के सूत्राधार आप ही रहे। 31 मई 1942 को समस्त **देश में सर्वप्रथम आपके ही प्रयत्न से और आपकी ही अध्यक्षता में युक्त प्रांतीय कांग्रेस कमेटी में एक प्रस्ताव द्वारा कांग्रेस कार्यकत्री समिति से अनुरोध किया गया कि, वह स्वाधीनता संग्राम आरंभ करे।** सरकार उनके तूफानी आंदोलन और कार्यक्रम से इतनी भयभीत हुई कि, आपको 4 जून 1942 को ही गिरफ्तार कर लिया गया। उसके बाद आप अगस्त 1945 में मुक्त हुए और सन् 1946 में आगरा जिले की समस्त जनता ने आपके प्रति

अपने प्रेम और सम्मान को प्रकट करते हुए एक लाख रूपये की थैली समर्पित की। सन् 1946 में निर्वाचन संग्राम छिड़ जाने पर आपने केन्द्रीय व प्रांतीय असेम्बलियों के चुनावों का सफल संचालन किया, स्वय आप केन्द्रीय असेम्बली में निर्विरोध चुने गये, इन्ही दिनों आप ने ग्वालीयर राज्य की सार्वजनिक सभा के चुनाव व अन्य देशी राज्यों में अपने तूफानी दौरों से जन आंदोलन को अनुप्राणित करते हुए उनका सफल संचालन किया।

आप विधान परिषद चुनाव बोर्ड के सदस्य चुने गये। इसी बीच आपने 05 अगस्त 1946 को लखनऊ में ही आपने ही सभापतित्व में प्रांत के प्रमुख कांग्रेस जनों के समक्ष कांग्रेस किसान मजदूर प्रजा पार्टी की स्थापना की, जिसमें आप पार्टी नेता निर्वाचित किये गये। पार्टी का आल इंडिया फ्रेम बनाया। आप प्रांतीय कांग्रेस कमेटी उत्तरप्रदेश के उपाध्यक्ष व अखिल भारतीय किसान कांग्रेस के प्रधानमंत्री तथा प्रांतीय किसान कांग्रेस के अध्यक्ष रहे है।

हमें यह लिखते हुए गर्व हो रहा है कि, आपको राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस के महत्वपूर्ण नेताओं व कांग्रेस हाईकमान में महत्व दिया जाता था। आपका लोहा आपके वैचारिक मतभेद रखने वाले भी मानते थे। इसका क्या कारण है? अब तक के इनके जीवन पर यदि हम दृष्टिपात करें तो ज्ञात होगा कि, आप त्याग व बलिदानों की साक्षात मूर्ति रहे है। यही कारण है कि जब–जब देश में आंदोलन चले तब–तब उनकी प्रतिभा निरखती गई। बात भी ठीक है कि, **बिना कसौटी पर कसे सोने की वास्तविकता का बोध करना कठिन है।** आज कल नेता गिरी करने के लिए कितनी प्रतिस्पर्द्धायें चल रही है। कोई बडे बडे नेता का आश्रय लेकर, कोई पत्रों में अपनी कीर्ति की ध्वजा दो–तीन कॉलमों में देखकर संतुष्ट हो जाता है। किन्तु बिना त्याग और बलिदानों के क्या कभी कोई बालू की भीत को ठहरते देख सकता है? आखिर वह रहेगी कब तक?

पालीवालजी में सबसे बडी बात थी कि, अन्य बडे नता के उठाने पर इतने उंचे नहीं उठे, बल्कि अपने त्याग व बलिदानों के द्वारा उत्तरप्रदेश के प्रांतपति और विधानसभा के सदस्य बनने और आखिरकार उत्तरप्रदेश मिनिष्ट्री ने पालीवालजी के सहयोग की आकांक्षा की । फलतः वे अर्थ एवं सूचना मंत्री बनाये गये। इसके साथ ही साथ पालीवालजी का सबसे बडा गुण निर्भीकता था। प्रत्येक विषय पर भलीभांति बिना दबाव एवं बिना डर के कार्य–संपादन करते थे।

स्वतंत्रता सेनानी श्री कृष्णदत्त पालीवाल आगरा के जीवन की रोचक बातें जो उनके उच्च राजनीतिक कद को इंगित करती हैं –

बच्चों से प्यार करने वाले चाचा नेहरू ने भले ही अंग्रेजों के दांत खट्टे किए हों, लेकिन आगरा में एक शख्स ऐसे भी थे जिन्होंने न केवल नेहरू को हराया था, बल्कि कई बार उन्हें डांट भी लगाई थी। इस शख्सियत से जुड़े उस समय के किस्से–कहानियों को बताने जा रहे हैं।

हम बात कर रहे हैं आगरा के पहले दैनिक अखबार ''सैनिक'' के संस्थापक और पूर्व गृहमंत्री (उत्तर प्रदेश) कृष्णदत्त पालीवाल की।

पौत्र देवेन्द्र दत्त पालीवाल ने बताया कि उनके दादा कृष्णदत्त 1939 से 1946 तक लगातार कांग्रेस के प्रान्तपति (उस समय के प्रदेश अध्यक्ष) पद पर रहे।

सन् 1939 में इलाहाबाद में जब कांग्रेस के प्रान्तपति का चुनाव हुआ तो उस समय संसद की तरह हाथ उठाकर समर्थन किया जाता था और जवाहर लाल नेहरू और कृष्णदत्त के बीच मुकाबले में सबसे ज्यादा हाथ कृष्णदत्त के समर्थन में उठे।

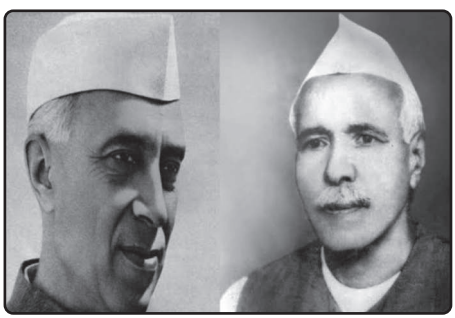

जब जवाहर लाल के समर्थक इसे गलत मानने लगे तो हॉल में रस्सी से पाला बनाया गया और दोनों के समर्थकों को अलग–अलग खड़ा कराया गया। कृष्णदत्त फिर विजयी हुए और लगातार 7 साल तक प्रान्तपति रहे।

दो साल तक नेहरू उपाध्यक्ष के पद पर रहे। इस दौरान कई गलती होने पर श्री जवाहर लाल नेहरू को कृष्णदत्त से डांट भी मिली।

श्री जवाहरलाल नेहरू ने खुद कृष्णदत्त के लिए चाय बनाई

– कृष्णदत्त पालीवाल की एक बात और प्रसिद्ध है, जब पीएम बनने के बाद नेहरू आगरा आए तो लक्ष्मी मिल में अधिवेशन हुआ। वहां से उन्होंने खुली गाड़ी में जवाहरपुल तक रैली निकाली और जवाहर पुल का शिलान्यास किया।

– उस समय कृष्णदत्त ने कांग्रेस छोड़ दी थी और उत्तर प्रदेश में स्वतंत्र पार्टी की सरकार में गृहमंत्री और वित्तमंत्री के साथ सूचना मंत्रालय भी संभाला हुआ था।

– उस समय जब अधिवेशन में कृष्णदत्त पंहुचे तो जवाहरलाल नेहरू ने खुद उनके लिए चाय बनाई और भिजवाई। इस बात के गवाह तत्कालीन कांग्रेसी आज भी हैं।

– कृष्णदत्त ने आगरा से टिकट न मिलने पर 1950 में कांग्रेस छोड़ दी थी और नेहरू से संबंध खत्म कर लिए थे। लेकिन 1965 में इंदिरा गांधी ने उन्हें कांग्रेस में शामिल कर राज्यसभा से सांसद बनाया था। इसके बाद मृत्यु तक वो राज्यसभा से सांसद ही रहे।

– इनके परिवार को सबसे ज्यादा स्वतंत्रता सेनानी होने का खिताब भी मिला हुआ है। इस परिवार में करीब 12 स्वतंत्रता सेनानी भी हुए।

भगतसिंह ने भी किया ''सैनिक'' में काम।

– कृष्णदत्त पुराने कांग्रेसी थे। इन्होंने कानपुर में गणेश शंकर विद्यार्थी के अखबार दैनिक प्रताप में बतौर संपादक काम किया था।

– उस दौरान भगत सिंह भी वहां बलवंत नाम से काम करते थे।

– सन् 1925 में जब इन्होंने अपना अखबार ''सैनिक'' शुरू किया, जो 1935 में दैनिक हुआ। आगरा आने पर भगत सिंह ने छह महिने ''सैनिक'' में काम किया और कसरेठ बाजार में रहे उसके बाद भगत सिंह ने नूरी दरवाजे में मकान किराए पर लिया और आगरा कॉलेज में दाखिला लेकर रहने लगे।

श्री कृष्णदत्तजी की चिरस्मृति में आगरा में **पालीवाल पार्क** का नामकरण किया जाकर उनकी आदम कद मूर्ति भी लगायी गयी। जिसका अनावरण महामहिम राज्यपाल द्वारा किया गया।

श्रीमती सुखी देवी पालीवाल

आप पंडित **कृष्णदत्तजी पालीवाल** की धर्मपत्नि है। आपका जन्म भेदसरा जिला मैनपुरी में हुआ था। यद्यपि आपको शिक्षा अधिक नही मिली। परन्तु पति के संसर्ग से आप एक सफलतम् पत्नि, समाज सेविका और अथक राष्ट्रीय कार्यकर्ती थी। आप कई बार जेल यात्रा भी कर चुकी थी और आगरा के महिला समाज में आपका प्रमुख स्थान रहा।

स्वाधीनता संग्राम के नायक राजस्थान के प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री श्री टीकाराम पालीवाल

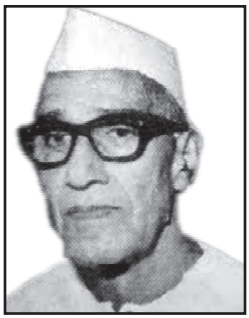

स्वाधीनता संग्राम के अमर नायक, राजनीति में मूल्यों के प्रस्थापक, कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार, स्वच्छ छवि और सादा जीवन के पक्षधर **पंडित टीकाराम (पित्थड़) पालीवाल राजस्थान के प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री रहे है।** आपका जीवन राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी से प्रभावित होकर स्वाधीनता संग्राम में छात्र जीवन से ही सक्रिय हो गये। स्वतंत्रता से पूर्व संघर्ष व स्वतंत्रता के बाद नव निर्माण की चेतना में राजस्थान के गिने चुने गाँधीवादी नेताओं में श्री टीकाराम पालीवाल का नाम सम्मान से लिया जाता है।

श्री टीकाराम पालीवाल का जन्म सवाईमाधोपुर के जिला (अब दौसा जिला) के महुआ तहसील के मंडावर ग्राम में 24 अप्रेल 1907 को पंडित हुकमचंद पालीवाल के मध्यवर्गीय परिवार में हुआ।

आपके पूर्वज जैसलमेर रियासत के 84 गांव में से पिथोड़ाई गांव के रहने वाले मुद्गल गौत्र के पित्थड़ उपजाति पालीवाल थे। जैसलमेर पलायन के बाद आपके पूर्वज फलौदी के पास जालोड़ा गांव में जाकर बस गए । उसके बाद वर्तमान दौसा (पूर्व में सवाई माधोपुर) जिले के महुआ तहसील के मंडावर गांव में जाकर बस गए।

आपकी प्रारंभिक शिक्षा मण्डावर फिर राजगढ़ जिला अलवर हुई। परन्तु वहाँ 13 साल की आयु में ही स्कूल में गाँधी टोपी व खादी के वस्त्र पहनने पर प्रधानाध्यापक ने आपको दंडित किया। विरोधस्वरूप आपने वह स्कूल ही छोड़ने का फैसला किया व देहली के राष्ट्रीय कॉमर्शियल स्कूल से मेट्रिक पास की व वही अध्यापक हो गये व अपनी शिक्षा भी आगे बढ़ाई।

आपने 1929 में देहली में स्टूडेण्ट एण्ड लीग नाम की संस्था स्थापित की व राष्ट्रीय युवकों का संगठन खड़ा किया, जिसने जन चेतना की नई लहर पैदा की। आपने देहली की एक स्कूल में मॉक पार्लियामेन्ट का भी

प्रस्तुतीकरण किया, जिससे स्कूल में क्रांति की एक लहर दौड़ गयी। उस समय देश में यह अपनी तरह का पहला प्रयास था। उन्होने सन् 1930 में नमक सत्याग्रह में भाग लिया व स्कूल से त्याग पत्र देकर पूरा समय राष्ट्रीय कार्य में लगा दिया व देहली दरियागंज में सत्याग्रह आश्रम जिसमें 800 सत्याग्रही शिक्षा पाते थे, का संचालन किया।

सन् 1930 में आपको कांग्रेस पत्रिका के संपादन कार्य का दायित्व सौंपा गया व उन्हीं दिनों आपको गिरफ्तार कर मुल्तान सेण्ट्रल जेल भेज गया। ट्रायल के दौरान मजिस्ट्रेट द्वारा गलत बात करने पर आपने 5–7 मिनट अपने केस की पैरवी स्वयं की व मजिस्ट्रेट की बातों का तार्किक खण्डन किया। न्यायालय में राष्ट्रीय स्तर के नेता श्री अंसारीजी उपस्थित थे। उन्होने पालीवालजी की पीठ ठोकी व कहा मास्टर तुम तो वकील बन जाओ। अतः पालीवालजी ने 1932 में वकालत पास की व मेरठ चले गये। सन् 1936 में **श्रीमती प्रकाशदेवी से मेरठ** में ही विवाह हो गया। आपके परिवार को एक पुत्र श्री कमलकांत व दो पुत्रियां कुसुम व सुधा पालीवाल ने सुशोभित किया।

सन् 1938 में हिण्डौन में वकालत प्रारंभ की व सन् 1939 में प्रजामण्डल का आंदोलन छिड़ने पर उनको गिरफ्तार कर लिया गया व इस बार 4 माह की जेल की सजा हुई। जेल से आने के बाद प्रजामंडल कार्यकारिणी का सदस्य व बाद में संयुक्त मंत्री व प्रधानमंत्री व फिर अध्यक्ष चुना गया।

सन् 1948 में शेखावटी के चनाणा गांव की एक सार्वजनिक सभा में एक सामंती सरदार ने नंगी तलवार से हमला करना चाहा तो आप वही डटे रहे तो तलवार घबराये हुए सामंत के हाथ में ही रह गयी और उसने अपनी गर्दन पालीवालजी के आगे झुका दी। सन् 1941 में पालीवाल राज्य प्रजामंडल के सवाईमाधोपुर अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गये, जिसका उद्घाटन वरिष्ठ जननेता आचार्य कृपलानीजी ने किया था।

सन् 1948 में राजस्थान में लोकप्रिय सरकार का गठन हुआ व पालीवालजी राजस्व मंत्री बने। सन् 1952 में प्रथम आम चुनावों में पालीवालजी दो स्थानों से पार्टी की ओर से प्रत्याशी बनाये गये व भारी मतों

से विजयी हुए। उसके बाद **3 मार्च 1952 को श्री पालीवालजी को विधायक दल का नेता चुना गया व मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलायी गयी।** उन्होने अपने प्रथम मंत्रीमंडल की बैठक में ही प्रथम प्रस्ताव पारित करवाया कि, लोकनायक जयनारायण व्यास जो आम चुनावों से पूर्व राज्य के मुख्यमंत्री थे एवं आम चुनावों में दुर्भाग्यवश पराजित हुए है को उपचुनाव लड़ाकर व विजयी बनाकर पुनः मुख्यमंत्री पद पर स्थापित किया जाये व ऐसा ही हुआ। किशनगढ़ से लोकनायक श्री जयनारायण व्यास को उपचुनाव जिताया व व्यासजी मुख्यमंत्री बने व पालीवालजी उपमुख्यमंत्री बने। पालीवालजी ने भगवान राम की खडाऊ जैसे भरत ने संभाल रखी थी व उनके लौटने पर राज वापस कर दिया, वैसा ही उदाहरण पालीवालजी ने आज के राजनैतिक जीवन में व्यासजी के लिए किया।

राज्य के 22 राजवाड़ों में कोई कानून नहीं था। काश्तकारों को जमींदार/जागीरदारों द्वारा कभी भी बेदखल कर दिया जाता था। राजस्व मंत्री के रूप में पालीवालजी ने किसानों का हितैषी व भूमि सुधार का जनक माना जाता है। इनके शासनकाल में काश्तकार संरक्षण अधिनियम, राजस्थान राजस्व न्यायालय अधिनियम, राजस्थान उपज लगान नियमन अधिनियम, राजस्थान भूमि सुधार एवं जमींदारी अधिग्रहण अधिनियम व कृषि किराया नियंत्रण अधिनयिम पारित करवाये गये। आपके गृहमंत्री काल में दस्यु समस्या का खात्मा हुआ।

इस प्रकार जयपुर राज्य में जब उत्तरदायी शासन का प्रारंभ हुआ तो वे नई विधानसभा के सभापति, आंतरिक मंत्रिमंडल मे राजस्व मंत्री, प्रजामंडल के प्रधानमंत्री और सभापति रहे एवं प्रथम आम चुनावों के बाद 1952 में लोकतांत्रिक सरकार के प्रथम मुख्यमंत्री राजस्थान रहे। उपमुख्यमंत्री, गृहमंत्री, सिंचाई मंत्री व वित्तमंत्री भी रहे। आगे चलकर वे राज्यसभा के सदस्य, लोकसभा के सदस्य व राष्ट्रीय अल्पबचत आयोग के अध्यक्ष भी रहे। भारत पाक युद्ध 1965 के बाद भारतीय शिष्ट मंडल के नायक बनकर बुल्गेरिया, रूमानिया, पोलेण्ड, हंगरी व इग्लेण्ड आदि देशों की यात्रा

पर गये व भारतीय विदेश नीति को स्पष्ट किया। श्री टीकारामजी, पंडित नेहरू, सरदार पटेल, लालबहादुर शास्त्री के अत्यन्त ही प्रिय व आदर प्राप्त करने वाले नेताओं में थे।

आपातकाल के बाद सन् 1977 में प्रदेश में गैर कांग्रेस सरकार बनी तो मोरारजी देसाई के साथ निकटता होने के कारण वे प्रदेश जनता पार्टी के अध्यक्ष बनाये गये। श्री टीकारामजी पालीवाल का देहावसान 8 फरवरी 1995 को बुधवार प्रातः हृदयाघात से 88 साल की उम्र में हुआ।

जीवन के उतरार्द्ध में स्वाध्याय, अध्यात्म, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की उन्नति के लिए प्रयास किये। सक्रिय राजनीति जीवन के प्रारंभ में चूकि पालीवालजी अध्यापक रहे थे, अतः उनको शिक्षा से विशष प्रेम था। अपने शासनकाल में **जयपुर में सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज व जोधपुर में सिविल इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना करायी।**

सन् 1990 में **श्रीमती सुन्दर देवी प्रकाश देवी पालीवाल जनहितकारी ट्रस्ट** की स्थापना की। जिसके द्वारा 11 चयनित विद्यालयों में दो लाख रू. प्रतिवर्ष छात्रवृति नियमित रूप से दी जा रही है।

श्री टीकाराम पालीवाल प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री की चिरस्मृति बनाये रखने के लिए जैसलमेर मुख्यालय पर मेरे प्रयास –

श्री टीकाराम पालीवाल राजस्थान में प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री और अनेक मंत्री पद पर कार्य कर चुके हैं और सांसद भी रहे।

मेरा विचार हमेशा रहा है कि समाज के संतगण, महापुरूषों एवं जिन जिनने पालीवाल समाज के लिए पुरूषार्थ किया है उनके सद्कार्यों को समाज के सामने लाना चाहिए। अफसोस इस बारे में कम ही ध्यान दिया गया चाहे कोई परिस्थिति रही हों।

चूंकि मैं जैसलमेर मुख्यालय पर निवास करता हूँ। मेरा सुलभ कार्यक्षेत्र जैसलमेर से ज्यादा कुछ नहीं हो सकता। मैंने इस संबंध में प्रयास किये। स्वाभाविक भी है कि शुरूआत अपने क्षैत्र से व स्वयं के प्रयासों से करनी चाहिए। यह भी बताना चाहूंगा कि इन प्रयासों के दौरान सर्वप्रथम जब

समाचार पत्र में श्री टीकारामजी का नाम दिया गया तब उनका नाम सीताराम पालीवाल प्रकाशित हुआ, यह भूलवश हो सकता है, लेकिन हमें विचार करना चाहिए कि हमारे महापुरूषों के नाम मानसपटल पर छाप छोड़े हुए नहीं है क्योंकि वर्तमान पीढी के सामने इनके प्रयासों को लाया ही नहीं गया।

1. मेरा प्रथम प्रयास रहा कि 8 फरवरी, 2006 को जैसलमेर मुख्यालय पर श्री टीकाराम पालीवाल जयंती समारोह को सार्वजनिक कार्यक्रम के रूप में आयोजित किया गया। जिसमें जैसलमेर जिले के प्रशासनिक, न्यायिक, पुलिस विभाग के उच्चाधिकारियों, विधायक, जिला प्रमुख, नगरपरिषद् के सभापति, शहर के सभी समाज के गणमान्य व्यक्तियों व पालीवाल समाज के सभी गांवों से प्रबुद्धजनों को आमंत्रित किया गया।

2. गांव–गांव जयंती व पुण्यतिथि कार्यक्रम आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया जिसके बाद हर वर्ष यह सिलसिला चल रहा हैं। अब टीकारामजी की जयंती व पुण्यतिथि पर हर क्षैत्र से श्रद्धांजलि कार्यक्रम नजर आ रहे हैं।

पोस्टर का विमोचन

जैसलमेर. स्थानीय मुक्तेश्वर मंदिर स्थित सभागार में ब्राह्मण महासभा की ओर से आयोजित कार्यक्रम में राज्य के प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री टीकाराम पालीवाल के पोस्टर का विमोचन किया गया। युवा ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष कमलेश छंगाणी ने बताया कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सिपाही कांग्रेसी नेता एवं राजस्थान के प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री स्वर्गीय टीकाराम पालीवाल के आकर्षक पोस्टर विमोचन के मौके पर कई जनप्रतिनिधि व समाज के लोग मौजूद थे। पोस्टर का विमोचन पूर्व विधायक गोवर्द्धन कल्ला, अध्यक्ष ब्राह्मण महासभा एसके दुबे, अधिवक्ता राणीदान सेवक, जैसलमेर नगरपालिका के अध्यक्ष अशोक तंवर और समाजसेवी विद्याधर पालीवाल ने किया।

3. श्री टीकारामजी के पोस्टर का विमोचन भव्य कार्यक्रम में कराया जाकर जनजन तक पहुंचाये गये।

4. जैसलमेर मुख्यालय पर श्री टीकाराम पालीवाल की

चिरस्मृति बनाये रखने के लिए नगरपरिषद् के माध्यम से आवासीय कॉलोनी का नामकरण का प्रस्ताव पारित किया गया। परंतु राजनीतिक खेमेबाजी के कारण वह तो नहीं हो सका परन्तु सक्रिय रहते हुए गांधी कॉलोनी में मुख्य सड़क पर विशाल व विकसित **उद्यान का नामकरण श्री टीकाराम पालीवाल** के नाम से किया गया और उनकी मूर्ति स्थापित करने का भी प्रस्ताव लिया जा चुका हैं।

श्री मिठूलाल पालीवाल-गंजडुड़वारा

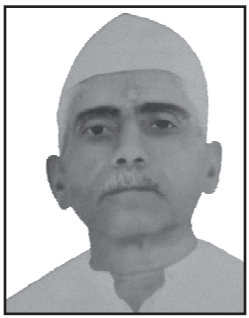

आपका जन्म पंडित मंशारामजी पालीवाल के घर 12 अप्रैल, 1907 (चैत्र शुक्ला 8 संवत् 1965) को गंजडुड़वारा (एटा) उत्तरप्रदेश में हुआ। आपके पिता स्व. **श्री मंशारामजी गांव गगाड़ी (जोधपुर)** से सेठ स्व. खुशालीरामजी गंजडुड़वारा के घर गोद गये थे।

शिक्षा– सन् 1928 में पालीवाल छात्रावास अलीगढ़ में रहकर राजकीय हाईस्कूल से मेट्रिक पास की। कक्षा 12 में जब आप अध्ययनरत थे तब, अपने पिता की अस्वस्थता के कारण पढ़ाई बीच में ही छोड़कर जमींदारी संभाल ली। आप कई वर्षों तक आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। आप 1947 से 1956 तक गंजडुड़वारा टाउन एरिया के चेयरमेन भी रहे। आप हरनारायण इण्टर कॉलेज व डिग्री कॉलेज में 25 से 35 वर्ष तक प्रबंधक कमेटी के सदस्य भी रहे।

राजनीति– ब्रिटिश शासन के विरूद्ध सत्याग्रह करने व सन् 1930 में शराब की नशाखोरी के विरूद्ध धरना देने के अपराध में आपको 3 माह का कठिन कारावास मिला। तब से आप देश के स्वतंत्रता आंदोलन मे बढ़–चढ़कर भाग लेते रहे और कांग्रेस में रहकर जनसेवा करते रहे। आपके कुशल व सर्वमान्य नेतृत्व में हनुमानगढ़ी के विशाल परिसर जिसमें भव्य मन्दिर, धर्मशाला, पुस्तकालय, संत विश्रामालय एवं 26 दुकानों का निर्माण कराया गया। आपका स्वर्गवास 17 नवम्बर 1981 में हुआ।

आपके परिवार के सदस्य जिसमें पुत्र स्व. श्री प्रतापनारायण (स्टेट बैंक), नरेन्द्रकुमार (रेलवे), डॉ. शांतिस्वरूप (परास्नातक कॉलेज), श्री शिवकुमार (प्रधानाध्यापक), श्री महेन्द्रकुमार (प्रधानाध्यापक), इंजी. सुरेन्द्रकुमार व इंजी. रविन्द्रकुमार ने समाज के लिए हर संभव सहयोग के प्रयास किये है। आपके पुत्र इंजी. **सुरेन्द्रकुमार** व **रविन्द्रकुमार** पौत्र **सुनील** व **प्रमोद** पिछले कई वर्षों से पालीवाल ब्राह्मण समाज में सक्रिय रहकर सेवायें दे रहे हैं। आपका जीवन जहाँ पालीवाल समाज ही नहीं अपितु राष्ट्र के लिए समर्पित रहा, वहीं आपके परिवारजन यथासंभव **समाज के लिए सदैव समर्पित दिखाई दे रहे है।** यह सब आपके संस्कारवान विचारों का ही प्रभाव कहा जा सकता है।

स्व. किशोरलाल पालीवाल

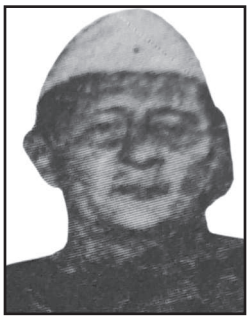

08 मार्च, 1975 को महान राष्ट्रीय स्वतंत्रता सेनानी, समाजसेवी पंडित किशोरलाल पालीवाल का देहावसान हुआ। 15 साल की आयु में ही महात्मा गाँधी के आह्वान पर विद्याध्ययन छोड़कर स्वतंत्रता संग्राम में कुदने वाले किशोर किशोरीलाल सेठ डालचंदजी तथा श्रीमती भागीरथी पालीवाल के एकमात्र पुत्र थे।

सन् 1928 से ही स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भाग लेने लग गये थे। विदेशी कपड़ा, मादक द्रव्य एवं शराब पर पिकेटिंग की व नमक सत्याग्रह एवं जंगल सत्याग्रह में कार्य किया। व्यक्तिगत सत्याग्रह में गिरफ्तार होकर एक सप्ताह जेल में रहे और तीन सौ रूपये जुर्माना की सजा भी हुई। सन् 1942 में जन क्रांति में स्वतंत्रता संग्राम के लिए तन–मन–धन से सहायता दी। कांग्रेस के स्वतंत्रता पूर्व व पश्चात प्रायः सभी ऐतिहासिक अधिवेशनों में सम्मिलित होते रहे। विशेषकर त्रिपुरी अधिवेशन में स्वयंसेवक थे व नागपुर अधिवेशन में राष्ट्रनायक प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू व श्रीकृष्ण मेनन को शेर के बच्चे जीव संग्रहालय हेतु भेट किये।

स्वतंत्रता पूर्व तहसील कांग्रेस कमेटी के सात वर्ष सभापति रहे और कांग्रेस के हजारों सदस्य बनाये। जिला कार्यकारिणी प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य 1935 से 1940 तक रहे। सन् 1957 से 1960 तक अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के मध्यप्रदेश से प्रतिनिधि सदस्य मनोनित किये गये। सन् 1957 में विरोधी दल के प्रमुख नेता व कट्टर प्रजा समाजवादी गढ़ के स्तम्भ ठाकुर निरंजनसिंह को हराकर मध्यप्रदेश विधानसभा के सदस्य चुने गये। सन् 1949 में कांग्रेस ने महाकौशल प्रांतीय अधिवेशन जिसका उद्घाटन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने किया उसके प्रमुख व्यवस्थापक रहकर सफल बनाया। सन् 1940 के जलगांव राजनैतिक परिषद सुनगांव जिला बुलढाना के स्वागताध्यक्ष थे जिसका उद्घाटन वी वामन रावजी जोशी ने किया। जिसमें विदर्भ के सभी बडे नेता सम्मिलित हुए।

15 अगस्त, 1948 से 1954 तक कांग्रेस की और से नामजद उपाध्यक्ष

जनपद सभा गाडरवारा रहे और 1954 से जनपद सभा गाडरवारा के चुने हुए अध्यक्ष पद पर अंत तक रहे। सन् 1955 से 56 तक न्याय पंचायत के भी अध्यक्ष रहे। भोपाल राजधानी के नवनिर्माण आवास समिति के सदस्य थे।

दानदाता व समाजसेवी भी रहे स्व. किशोरलाल–

नरसिंहपुर जिले में पवित्र नर्मदा तट पर स्थित बरमान घाट में **सन् 1952 में दो लाख रू. की तिमंजली इमारत व 42 एकड भूमि दान में देकर व एक कृषि विज्ञान उच्चत्तर माध्यमिक शाला की स्थापना की। सन् 1954 में सरकार को पांच हजार कीमती मकान ग्राम चावरपाटा में औषधालय हेतु दान दिया।** सन् 1955 में चार हजार रू. कीमती मकान एवं 30 एकड़ जमीन जलगांव की जनपद सभा को ग्राम सुनगांव में औषधालय हेतु दान दी। एक तिमंजली इमारत ग्राम चिरिया तहसील गाडरवारा में स्कूल हेतु दान दी। सन् 1955 में ग्राम चालढ़ाना जिला बुलढ़ाना की 250 एकड़ भूमि भूदान में दान दी। जिस पर शहीद शांताबाई ठाकरे के नाम पर शांता बाड़ी ग्राम बसाया गया। तहसील गाडवारा में ग्राम चिरया एवं चिलका के तालाब जनता के उपयोग हेतु राज्य सरकार को दान दिये। उत्तरप्रदेश के अलीगढ़ शहर पालीवाल महाविद्यालय में आर्थिक सहयोग प्रदान कर कक्ष निर्मित कराये। जातीय सेवा में अनेकों रूढीवादी बातों को समाप्त किया व प्रगतिशील पत्र **पालीवाल मित्र** का प्रकाशन एवं संपादन किया। ग्राम बरमान में दो धर्मशालायें व चांवरपाठा में नर्मदा परिक्रमा वासियों को निरन्तर कई वर्षों से सदावृत, भोजन, वस्त्र की व्यवस्था का आयोजन एक महान कर्म है कई तीर्थों में धर्मशालायें स्थापित की एवं धनराशि दान में दी। जहाँ–तहाँ पानी की कमी वाले गांवों में कुएं व बावड़ियां खुदवाई। ग्राम बरमान की वर्तमान सार्वजनिक धर्मशाला के लिए दो हजार रू. प्रदान किया। जातीय छात्रवृति हेतु पांच हजार रू. व प्रतिवर्ष अनेको गरीब छात्रों को उच्च अध्ययन के लिए छात्रवृति, वस्त्र, भोजन एवं निवास व्यवस्था अपनी और से अंतिम समय तक करते रहे। गिरराज उच्चत्तम माध्यमिक शाला नरसिंहपुर के छात्रावास निर्माण हेतु 14000/–रू. का दान कर उल्लेखनीय कार्य किया। आपके जनहित कार्यों में निरन्तर औषधी वितरण, दीनहीन की कन्याओं का विवाह आदि हेतु आर्थिक सहयोग रहा है।

पण्डित रामचन्द्र पालीवाल

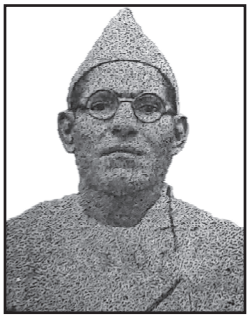

गेहूंआ रंग मझौला कद और छरहरा किन्तु चुश्त बदन खदर की साफ चूड़ीदर पाजामा, बदन मदन में कुर्ता और बंद कोट, पैरों में अफगानी चप्पल व सिर पर किश्तुनुमा गाँधी टोपी, काली–काली परन्तु चमकीली आँखों पर मोटे फ्रेम का चश्मा व गंभीर विचारों से ओतप्रोत **पंडित रामचन्द्र पालीवाल** ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

स्व. श्री सीतारामजी के इस सुपुत्र पंडित रामचन्द्र पालीवाल ने स्वतंत्रता संग्राम में कठिनाईयों के चलते बढ–चढकर भाग लिया। उसकी तुलना किसी अन्य से नहीं की जा सकती। सन् 1920–21 के लगभग आप डेढ़ साल की सजा काटकर आगरा सेण्ट्रल जेल से बाहर आये और फिर से कांग्रेस के अभियान में जुट गये।

बचपन से ही प्रवृती सेवा भावना की रही और हिन्दी का चौथा दर्जा भी पास नहीं किया। अंग्रेजी की एबीसीडी मास्टर भँवरलाल से कुछ दिन पढ़ी। बस यही इनकी शिक्षा रही। आपने सर्वप्रथम समाज सेवा का कार्य फिरोजाबाद और आगरा में ही किया। सन् 1911–12 स्वर्गीय महामना पंडित मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित सेवा समिति की देश भर में शाखाएं थी। पंडित रामचन्द्रजी अपने चाचा सेवाराम के साथ सेवा समिति के एक स्वयंसेवक बने। कुछ दिन बाद उनके छोटे भाई जीवाराम पालीवाल भी शामिल हो गये। धीरे–धीरे इनका परिवार ही सदस्य बन गया।

सन् 1918 में देशभर में इल्फुएंजा बुखार का भयंकर प्रकोप हुआ। जिसमें करीब 70 लाख भारतीयों की मृत्यु हुई। उसमें आप ने अपनी जान की परवाह किये बिना ही दिन–रात लागों की सेवा की व इनके छोटे भाई जीवाराम भी सेवा करते जाते।

रामचन्द्रजी ने अपना सार्वजनिक जीवन समाज सेवा के रूप में शुरू किया और 1916 में राजनैतिक जीवन शुरू कर दिया । पंजाब रोलेट एक्ट के खिलाफ विराध सभायें करायी। कांग्रेस व खिलाफत के आंदोलन में लंगोटी

कसकर कूद पड़े, जिसके फलस्वरूप डेढ साल के लिए ब्रिटिश सरकार द्वारा जेल भेज दिया गया। उसके बाद 1930, 1932, 1933, 1941 व अंत में 1942 के अगस्त आंदोलन में कुल मिलाकर 6 बार जेल गये। आप अपने परिवार में अकेले जेल यात्री नहीं थे। **आप की धर्मपन्ति तीन बार, छोटे भाई जीवाराम ने 6 बार व उनकी धर्मपत्नि ने चार बार व छोटे–छोटे बच्चों ने भी अपनी माताओं के साथ अनेक बार जेल यात्रायें की है।** सन् 1942के अगस्त आंदोलन में आगरे जिले में जो कुछ किया, उसका वर्णन आगरा वासी ही नहीं, आस–पास की जनता भी अच्छी तरह जानती है। उनके नाम से बडे–बडे पुलिस अधिकरी कांपते थे और उनके संबंध में जनता में नित नई बातें आती। आपके दामाद मदनलाल के यहाँ बम बनाने का सामान व अनेक विस्फोटक पदार्थ उनके दिल्ली स्थित मकान में मिले। जिससे उनको भी तीन साल की सजा हो गयी और लाहौर जेल में तीन साल काटे। आपका भाणजा श्री रामकृष्ण व उनके मामा रामगोपालजी पालीवाल भी आपकी वजह से नजर बंद कर दिये गये। कईयों को पुलिस में हाजरी देना अनिवार्य कर दिया गया।

रामचन्द्रजी का जीवन एक सच्चे कर्मयोगी की कहानी है, जिसने कभी नाम कमाने या किसी निजी स्वार्थ के कारण कोई कार्य नहीं किया। मूक व निस्वार्थ सेवी, निरभिमानी, सादा जीवन, निष्कपट आचरण आदि गुण साकार रूप में किसी में देखने को हो तो आपका इतिहास नजदीक से जाने।

आपका गृहस्थ जीवन सुखद नहीं रहा। आपके पिता का स्वर्गवास आपके 5–6 साल की आयु में हो गया व आपकी पहली पत्नि शादी के 8–9 साल बाद ही देहांत हो गया व दूसरी शादी के बाद भी उनकी पत्नि 1941 में क्षय रोग से मृत्यु को प्राप्त हुई। खुद कई बार जेल के अन्दर रहे और अपनी दूसरी पत्नि की मृत्यु पर पैरोल पर जेल से छूटकर आये व क्रिया कर्म के बाद जेल भेज दिये गये। तीन छोटे बच्चों को भगवान भरोसे छोडना पड़ा। जेल से छूटने के बाद आपको कई आर्थिक संकटों को झेलना पड़ा।

इस प्रकार आपके पारिवारिक व सामाजिक कठिनाईयों के बावजूद राष्ट्रीय स्वतंत्रता के आंदोलन में बढ़चढ़ कर भाग लिया और स्वयं ही नहीं अपितु परिवार के सदस्यों को भी राष्ट्र सेवा के लिए प्रेरित किया और पूरे परिवार की आहुति दे डाली।

स्वतंत्रता सेनानी जीवाराम पालीवाल

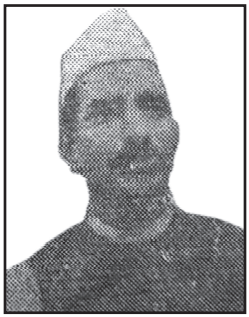

महान राष्ट्रीय स्वतंत्रता सेनानी पंडित रामचन्द्र के छोटे भाई व स्व. सीताराम के इस सुपुत्र ने भी राष्ट्र सेवा में अपना जीवन समर्पित किया। आपकी जन्म तिथि के बारे में ता पता नहीं, परन्तु फरवरी 1948 में आपकी उम्र लगभग 49 साल की थी। आपकी स्वयं की लिखी आत्मकथा से यह प्रसंग पाठकों के सामने रखा जा रहा है।

जैसा की आपने लिखा 8 मई, 1943 को रावलपिंडी स्टेशन पर गिरफ्तार होकर व कुछ दिन अनारकली थाने में रहकर लाहौर की कोठरी में आपको बंद रखा गया। चार महीने बाद बम्बई के युवक मित्र चन्द्रकांत मोदी, बिहार के प्रसिद्ध समाजवादी नेता पंडित रामनंदन मिश्र के साथ लाहौर की जेल की सब डिवीजन कसूर की जेल में लाकर कालेपानी की सजा दी गयी। कुछ दिन बाद वही पर बम्बई के प्रसिद्ध समाजवादी नेता पुरूषोत्तमदास टीकमदास को भी आपके पास रखा गया। लगभग 15 माह के कालेपानी की सजा के बाद आपको पंजाब के राजनैतिक जेल गुजरात भेजा गया। यहां प्रांत भर के नेता व कार्यकर्ता जमा थे। तीन महीने वहाँ रहकर बरेली सेण्ट्रल जेल भेजा गया व यहाँ पर 6 माह के बाद 5 अक्टूबर 1945 को आपको रिहा किया गया।

जेल से छूटे उस समय आप काफी बीमार रहे। आपके अनुसार 6 बार जेल गये। परन्तु 1942 के अगस्त आंदोलन मे जैसा अनुभव हुआ वैसा कभी नहीं हुआ। सन् 1933 में कलकत्ता में कांग्रेस के अधिवेशन से एक दिन पहले आपको गिरफ्तार किया जाकर लाल बाजार पुलिस स्टेशन में ले जाया गया और काफी मारपीट की गयी। जकरिया स्ट्रीट से लाल बाजार पुलिस स्टेशन तक नारे लगाते–लगाते आकाश गूंजा दिया गया।

आपके अनुसार 1922 में आपको कानपुर प्रताप में बुलाया गया। एक साल यहाँ रहकर बाद में अपने भाई रामचन्द्रजी के साथ इस्तीफा देकर चले गये। आदर्श प्रेस के मैनेजर व सैनिक के सहायक संपादक रहे। सन् 1929 में छिरामऊ रोजगार करने गये, किन्तु उसी समय से राजनैतिक क्षेत्र में

क्रियात्मक कार्य करने लगे व 1930, 31, 32 व 33 में जेल गये व सन् 1940 में सैनिक में एक उग्र लेख के कारण तीन साल की जेल व 800/– रूपये जुर्माना हुआ। इस प्रकार कुल छह बार जेल गये व उनकी पत्नि श्रीमती पार्वतीदेवी भी 4 बार जेल गयी। आपने यह भी लिखा कि आपके भाई रामचन्द्रजी आपके प्रेरणास्त्रोत रहे और अंतिम समय में आपने उनकी इच्छा से सैनिक पत्र का काम संभाला।

श्री विष्णुदयाल पालीवाल - सुल्तानपुर

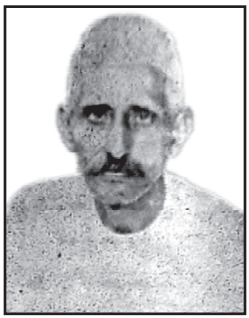

स्वतंत्रता सेनानियों की कड़ी में श्री **विष्णुदयाल पालीवाल** सुल्तानपुर का नाम बड़े गर्व से लिया जाता है। आपको दादा के नाम से भी जाना जाता था। लगातार 26 साल तक आपने कठिन परिश्रम किया। आपके पिता पंडित दौलतरामजी पालीवाल सुल्तानपुर जिला फरूखाबाद की धाक सरकारी व गैर सरकारी क्षैत्रों में थी। आप अपने पिता की आँखों के तारे थे। आपने कभी भी आराम की जिन्दगी जीने में विश्वास नहीं किया और छात्रावस्था से ही देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने की व देश में साम्राज्यवादी व्यवस्था को दर कर समाजवादी सरकार/किसान मजदूर प्रजा राज्य स्थापित करने की लगन थी।

सन् 1921 में ग्राम–ग्राम जाकर कांग्रेस के सदस्य बनाकर कांग्रेस का प्रचार किया व तिलक स्वराज्य फण्ड बनाया जिसके कारण पुलिस ने रिपोर्ट अपने अधिकरियों को भेजी। इस बात की जानकारी होने पर आपने बंदूक बेचकर लाईसेन्स वापिस कर दिया। सन् 1931 में सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेकर 6 माह का कठिन काराग्रह व्यतीत किया व काराग्रह जाने से प्रथम संबंधियों ने बहुत समझाया कि बच्चों की माता का देहांत हो गया है व छोटे–छोटे बच्चे है इनकी परवरिश कौन करेगा, जिस पर उत्तर दिया कि यदि मैं मर जांऊ तो परवरिश कौन करेगा ।

आप रास्ते से नहीं डिगे व सन् 1941 में लगन से काम करने पर नजरबंद कर दिये गये। फतेहगढ़ जेल से आगरा सेण्ट्रल जेल भेज दिया गया।

आपका त्याग, तपस्या और कार्यक्षमता को देखकर 1931 में प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य बनाये गये व लम्बे समय तक सदस्य रहे। सन् 1940 में जिला कांग्रेस कमेटी के सर्वसम्मति से प्रधानमंत्री चुने गये। आपका **फरूखाबाद जिला में वही स्थान है जो भारत में बापू** का रहा है।

क्रांतिकारी चिरंजीलाल पालीवाल - बुलंदशहर

फोटो उपलब्ध नहीं

आपका जन्म कार्तिक शुक्ल 15 संवत् 1971 में बुलंदशहर में पंडित किशनलाल के घर हुआ। बाल्यकाल ही में जातीय प्रथानुसार आपका पाणिग्रहण संस्कार 1926 में पंडित गोकुल प्रसाद पालीवाल मंझला निवासी की सुपुत्री के साथ कर दिया गया। आपकी शिक्षा सीमित ही रहीं सन् 1926 में आप अपने ससुराल मंझला में रहने लगे।

राजनैतिक क्षैत्र में आप सन् 1930 से ही आ गये व सन् 1939 में जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य बनाये गये व उसी दौरान सूबा कांग्रेस के सदस्य चुने गये व लम्बे समय तक रहे। सन् 1942 में सत्याग्रह करने के कारण आपको 6 माह का कारागृह व 20/—रू. जुर्माना की सजा मिली।

सन् 1942 के आंदोलन में आप फरार हो गये। फरारी की हालत में आप गाँधीजी की पूर्ण कुटीसेवा ग्राम, वर्धा, दादा दुखालय रतोदरो—बम्बई, गाँधी खिदमत घरी, हुनावर, धुलिया खान देश, चर्खा संघ, काश्मीर व पूना में कागज बनाने में व्यस्त हो गये। दस माह स्वयं सेवक आश्रम बिलीमीरा गुजरात में कागज बनाने के व्यवस्थापक रहे। इसी प्रकार उक्त स्थानों पर रहकर विनाबा भावे, शिवाजी महाराज, बालूभाई मेहता आदि राजनेताओं के संपर्क मे रहने का सौभाग्य मिला।

आपको फरारी की हालत में कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। आप इंदौर से पाताल पानी तक आधी रात को रेलवे लाईन पर होकर पैदल गये व डूबते—डूबते बचे। एक बार आप टूण्डला आ रहे थे, आपका साथ सीआईडी वालों ने किया। किसी प्रकार आपको पता लग गया तो आप चलती ट्रेन से कूद पड़े।

मरूभूमि के सपूत
''स्व. पण्डित ब्रह्मदत्त पालीवाल''

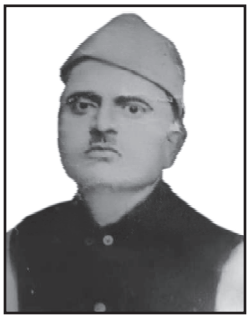

श्री ब्रह्मदत्त पालीवाल का जन्म 20 जून 1914 को **गांव लवां तहसील पोकरण जिला जैसलमेर** में पंडित श्री परमसुखजी कुलधर के घर हुआ। आपकी माता का नाम श्रीमती रतनीदेवी था। इस लाडले सपूत ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पाकिस्तान स्थित पंजाब राज्य में आर्य स्कूल भोपालवाला में ग्रहण की। यहाँ से मेट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की। आप हिन्दी, सस्कृत अंग्रेजी और उर्दू भाषा में निपुण थे। वहाँ पर आपने व्यापार प्रारंभ किया। परन्तु व्यापारिक पेशा आपको रास नहीं आया और पुनः अपने गांव लवां में निवास करने लगे।

पाकिस्तान से लौटने के बाद आप अपने गांव में रहकर सामाजिक सेवायें देते रहे। **आजादी के आंदोलन में क्रांतिकारियों में कंधा मिलाकर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया।** पोकरण–फलौदी क्षेत्र के पोकर भाभा, छोगालाल खत्री, लीलाधर व्यास, खरताराम चौधरी, सरलजी–कठिनजी लोर्डियां के साथ आजादी के महायज्ञ में अपना हाथ बटाया। पोकरण–फलौदी में **अंग्रेज सरकार के खिलाफ चले किसान आंदोलन में** आपने सक्रिय भूमिका निभाई। जयनारायण व्यास, मथुरादास माथुर के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लोगों में आजादी की चेतना लगायी।

किसानों पर सामन्ती जुल्म देख ठिकाने के तत्कालिन कामदार के आपने थप्पड़ जड़ दिया। डाकू उन्मूलन में सरकार का सहयोग कर डाकुओं से जनता को निजात दिलाई।

आजादी के पश्चात आप ग्राम पंचायत लवाँ के **प्रथम सरपंच** चुने गए। सरपंच कार्यकाल में अकाल से जूझ रही जनता को चारा, अनाज, रोजगार, पानी उपलब्ध करवाकर राहत पहुँचायी। जन सहयोग से विद्यालय का निर्माण करवाकर शिक्षा के प्रति लोगों जागृति पैदा की। आपकी इमानदार एवं निर्भिक छवि से राज्य के मुख्यमंत्री सुखाड़िया, मंत्री एवं अधिकारी आपसे

प्रभावित थे। भ्रष्ट अधिकारी व कर्मचारी आपके पास आने से डरते थे।

आपसे प्रभावित होकर **संत प्रभुदास ने पोकरण स्थित भवन पालीवाल समाज को भेंट किया जो अभी पालीवाल समाज भवन पोकरण है।**

समाज में चार दिन के विवाह की परंपरा थी, जिसे आपने दो दिन का करते हुए अपने घर से शुरू कर नई परंपरा डाली। मृत्यु भोज के आप सदा विरोधी रहे। समाज में व्याप्त अफीम–बीड़ी–सिगरेट नशे के खिलाफ थे। समाज में बालिका शिक्षा के पक्षधर थे।

आप बात के पक्के व कथनी करनी में कोई फर्क नहीं रखते थे। हमेशा सत्य का साथ देना आपका ध्येय रहता था। आपने देश की आजादी के आंदोलन में अपना सहयोग तो दिया ही आजादी के बाद भी स्वयं अपने व्यक्ति निर्माण उदाहरण पेश करते हुए गांव सुधार व समाज सुधार के प्रयास करते रहे। आप अनवरत समाज कार्यों में रहते हुए **10 जुलाई 1981** स्वर्ग लोक सिधार गये। आपके जाने के बाद ग्राम लवाँ में आप जैसे व्यक्तित्व की पूर्ति नहीं हो सकी।

आपके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर गाँधीवादी नेता **श्री गोवर्धनदास कल्ला ने अपने विधायक काल में वर्ष 2003 में विधायक मद से दो लाख रू. की राशि स्वीकृत कर आपकी स्मृति में स्मारक बनवाया व मूर्ति अनवारण कार्यक्रम में श्री बी.डी. कल्ला, हेमाराम चौधरी व के.सी. विश्नोई को आमंत्रित कर जनमानस में स्मृति को पुनः ताजा किया।** आपके दोहिते श्री सुनील पालीवाल IAS व अनील पालीवाल IPS ने भी उच्च प्रशासनिक पुलिस सेवा में चयनित होकर पालीवाल समाज को गौरव प्रदान किया है।

स्वतंत्रता सेनानी स्व.श्री पृथ्वीसिंह पालीवाल (पुनंध)

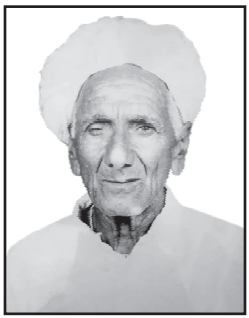

ग्राम – छीला
तहसील – फलौदी
जिला – जोधपुर (राज.)
जन्म स्थान – ग्राम मुडलाना, जिला रोहतक, राज्य – हरियाणा
जन्म तिथि – 12 जनवरी 1909
देहावसान – 17 अप्रैल 1986

मरू भूमि के इस लाल का जन्म पंडित श्री प्रेमराज (पुनध) पालीवाल के यहाँ हुआ। आपने प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा हरियाणा प्रांत में प्राप्त की। आपका मूल **गाँव छीला तहसील फलौदी, जिला जोधपुर** रहा है। लेकिन आपके पूर्वज दत्तक पुत्र के रूप में हरियाणा में रहे। जिसके कारण आपका जन्म, प्राथमिक शिक्षा व जवानी में स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग, कारावास आदि हरियाणा प्रांत में ही हुए।

ग्राम छीला की धरा के इस लाल ने अपने पूर्वजो की कार्यभूमि जो आपकी जन्मभूमि भी रही है। वहाँ की आजादी के आंदोलन में योगदान देकर पालीवाल समाज ही नहीं अपितु राजस्थान राज्य का नाम भी इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों से लिखवाया।

आपने महात्मा गाँधी व कांग्रेस द्वारा चलाये जाने वाले अंग्रेजी सरकार विरोधी स्वतंत्रता आंदोलन में बढ–चढकर भाग लिया। जिसके कारण जिला रोहतक राज्य हरियाणा जेल में आपको 22 सितम्बर, 1930 से 22 दिसम्बर, 1930 तक कैद में रखा गया।

जेल में कैद के दौरान जब जेल अधिकारियों ने आपका परिचय पूछा तो आपने निर्भयता से जानबूझकर अपना नाम **पृथ्वीराज के स्थान पर पृथ्वीसिंह पालीवाल** बताया। तब से इनको **पृथ्वीसिंह पालीवाल** के नाम से जाना जाने लगा। इसके ठिक बाद आपको पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की लाहौर जेल में भी कुछ समय के लिए कैद में रखा गया।

जेल से रिहा होने के बाद हरियाणा **प्रांत की जमीन**–जायदाद

बेचकर पुनः पैतृक गांव छीला में आये। फिर 25 साल की आयु में लगभग **1935 में आपका विवाह श्रीमती रानूदेवी सुपुत्री श्री सिद्धाराम धामट निवासी मोखेरी तहसील फलोदी के साथ हुआ।** शादी के बाद अपने पैतृक गांव छीला में स्थायी रूप से रहने लगे। राजस्थान सरकार ने **आपको स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा दिया** तथा आपके आजादी के आंदोलन में रही भूमिका आधार पर 9 नवम्बर, 1972 से सम्मान के तौर पर **स्वतंत्रता सेनानी पेंशन** प्रारंभ की गयी। आपका निधन 17 अप्रैल, 1986 को ग्राम छीला में हुआ। निधन के बाद आप की धर्मपत्नि रानूदेवी को भी इनकी मृत्युपरांत पेंशन मिलती रही। आपकी धर्मपत्नि का निधन 8 जुलाई, 2009 को हुआ। आपकी स्मृति को चिरस्थायी रखने के लिए आपके छोटे पुत्र **श्री दयाराम पुनध ने छीला बस स्टेण्ड पर सार्वजनिक प्याऊ का निर्माण करवाकर भेट की।**

स्व. पृथ्वीराज उर्फ पृथ्वीसिंह पालीवाल ने देश की आजादी में जो सहयोग दिया वह हमेशा ही पालीवाल समाज के लिए प्रेरणादायी रहेगा और सदा स्वतंत्रता सेनानियों के इतिहास में आपका नाम याद दिलाता रहेगा।

साहित्यकार हरिदत्त पालीवाल ''निर्भय'' एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में

आपका जन्म साहित्य सिरोमणि पंडित मथुराप्रसादजी व्याकरणाचार्य निवासी कायमगंज जिला फरूखाबाद के यहाँ सन् 1924 में हुआ। जन्म के दो साल उपरान्त ही आपके पिता का स्वर्गवास हो गया। आपकी प्रारंभिक शिक्षा सांगवेद विद्यालय नरवर राधाकृष्ण कॉलेज व हिन्दू विश्वविद्यालय काशी में हुई। बाल्यकाल में ही पिताजी का स्वर्गवास हो जाने के कारण आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। इसलिए आपकी शिक्षा साहित्यशास्त्री, साहित्यरत्न एवं कुछ अलग भाषा तक ही सीमित रही। छात्रावस्था से ही आप देश प्रेम से ओतप्रोत रहे। महापुरूषों के चरित्र व सिन्द्धान्तों का अध्ययन किया।

आप दांपत्य जीवन के लिए तैयार नहीं थे, फिर भी वृद्ध माता के आग्रह को नहीं ठुकरा सके और रोहतक निवासी **पंडित सेवाराम पालीवाल वकील** की सुपुत्री कमलादेवी के साथ आपका पाणिग्रहण संस्कार हुआ।

सन् 1940 में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने देश के छात्रों को फटकारा। जिसके कारण पाठशालाओं में आंदोलन की आग भड़क उठी। विद्यालय में आपत्तिजनक कागज, पुस्तके रखने के अपराध में बंदी बना लिये गये। अल्पायु होने के कारण एक सप्ताह जेल में रखकर मुक्त कर दिये गये। छूटकर आने के लगभग दो सप्ताह बाद ही अवैध शस्त्र रखने के अपराध में पुनः आपको हाथरस जंक्शन पर गिरफ्तार कर लिया गया।

9 अगस्त, 1942 के आंदोलन में कई नेता जेलों में बंद कर दिये गये। उस समय आप कैसे पिछे रहते। 23 अगस्त, 1942 को स्थानीय सार्वजनिक स्थान शिवालय से एक भारी जूलूस निकाला। हाथों में विजय का परिचायक झण्डा लहरा रहा था। एक हजार व्यक्तियों के जूलूस सहित थाने सामने पहुंचे और थाने पर राष्ट्रीय ध्वज लगाने का प्रयत्न किया। परन्तु पुलिस ने आपको गिरफ्तार कर लिया व लाठियों के प्रहार से एकत्र जनसमूह को

तितर–बितर कर दिया।

आपने राष्ट्र सेवा के साथ ही साहित्य के क्षेत्र में भी काफी कार्य किया है। साहित्य परिषद् की ओर से आपको **श्याम पुरस्कार** दिया गया। अप्रैल 1947 में **करामुक्त** रचना पर विजावर राज्य से पारितोषिक प्रदान किया गया। नयायुग सप्ताहिक फरूखाबाद के आप संपादक रहे व **''पालीवाल संदेश आगरा''** से प्रकाशन किया गया उसके **संपादक** भी रहे है।

आगरा का लाल
स्वतंत्रता सेनानी प्रेमदत्त पालीवाल

आपका जन्म गढ़ी नारायणलाल मौजा बरौली डाडौकी जिला आगरा में सन् 1919 में हुआ। सन् 1932 के राष्ट्रीय आंदोलन में आपको तीन बार सरकारी कानूनों का उल्लंघन करने के कारण गिरफ्तार किया गया। किन्तु 12–13 साल की छोटी उम्र के कारण एक–दो रात जेल में रखकर आपको छोड़ दिया गया। आपके सारे आर्म्स जब्त कर लिये गये। उसके बाद विद्याध्ययन के साथ–साथ आप छात्रों में राष्ट्रीय भावना भरते रहे। सन् 1935–40 में इंटर से कॉलेज छोड़कर महात्मा गाँधी द्वारा संचालित व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया। प्रथम वार डे माह हवालात में रहने के बाद एक सप्ताह के बाद ही दूसरी बार गिरफ्तार कर लिए गये और सत्याग्रह संचालन का अपराध लगाकर एक साल का कठोर कारावास हुआ। सन् 1941 में जेल से छूटने के बाद से हिन्दी के प्रमुख पत्र **''सैनिक''** में कार्य किया। यू.पी. सरकार द्वारा सैनिक को बंद कर देने पर सैनिक ट्रस्ट ने **''अमर सैनिक''** निकाला। जिसके आप संपादक, प्रकाशक व मुद्रक नियुक्त किये गये। राष्ट्रीय आंदोलन में आपके **पिताजी, भाई, बहिन, भाभी** आदि सारा परिवार जेल में बंद रहा और सन् 1942 में सारा सामान जब्त करके पुलिस ने नष्ट कर दिया। सन् 1942 की अगस्त क्रांति में यूपी सरकार ने आपको विशेषकर तपाया और कठिन परीक्षा में खरे उतरे। आपकी क्रांतिकारी हलचलों से सरकार इतनी भयभीत हो गयी कि, आंदोलन आरंभ होने से आठ दिन पहले ही साथियों सहित वारण्ट निकाल दिया। किन्तु आप पुलिस की आँखों मे धूल झोंककर भी बड़ी मुस्तेदी से काम करते रहे। बाद में आपको जिन्दा या मुर्दा लाने के लिए पुलिस ने दो हजार रू. का ईनाम भी रखा। चार साल बाद वारन्ट रद्द होते ही आपने क्रांतिकारी युवकों का संगठन अ.भा. युवक कांग्रेस के नाम से किया, जिसके आप प्रधानमंत्री रहे।

आगरा जिले का मजदूर संगठन भी आपने ही प्रारंभ किया। आपकी राष्ट्रीय आंदोलन व स्थानीय आंदोलन में भूमिका व कांग्रेस में आपके महत्व को समझा जा सकता है कि विभिन्न संगठनों के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सदस्य रहे। ◆◆◆◆

दिल्ली का लाल
स्वतंत्रता सेनानी पंडित चिरंजीलाल

आपका जन्म 5 जनवरी, 1905 को देहली के पास **जाटी कला** में हुआ। आपने हिन्दू कॉलेज देहली से सन् 1930 में एम.ए. किया और 1933 में देहली यूनिवर्सिटी से एल.एल.बी. की उपाधि प्राप्त की।

आप अपने छात्र जीवन से ही सार्वजनिक सेवा की ओर अग्रसर रहे और ब्रिटिश सरकार के प्रति तो आपको प्रारंभ से ही घृणा रही। जिसका जीता जागता उदाहरण आपने अपने विद्यार्थी काल में युवराज वेल्स के आगमन पर उनके स्वागत समारोह के अवसर पर देहली के समस्त छात्रों को रोककर विरोध करके दिया। इसके अतिरिक्त गवरमेण्ट हाई स्कूल में इम्पायर दिवस पर होने वाली स्काउट रेली में जब आपने चीफ कमिश्नर तथा अन्य स्थानीय अधिकारी वर्ग के समक्ष मि.आर. स्काउट कमिश्नर की यूनियन जैक को सलामी देन से इनकार कर दिया व चूंकि यूनियन जैक कौमी झण्डा नहीं था, इसलिए आपने सलामी ही नहीं दी अपितु उसके फलस्वरूप आपने स्काउट की पूरी वर्दी, रूमाल, रस्सी व लकड़ी फेंककर सदा के लिए स्काउट से नमस्कार कर लिया।

इस वीरता पूर्ण कार्य से आपको समस्त छात्रों ने हाथों में उठा लिया। इसी समय आपने क्रांतिकारी संस्था **तरूण समाज** की नीव डाली। इसके बाद आपने दिल्ली के छात्रों की केन्द्रीय संस्था केन्द्रीय संस्था **दिल्ली विद्यार्थी यूनियन** के नाम से स्थापित की। जिसके सभापतित्व का भार आप पर ही डाला गया। इस आंदोलन में पूरा भाग लिया व आपको दो बार 6–6 माह की जेल भुगतनी पड़ी। फिर क्या था दिल्ली प्रांत की कन्वेशन अगस्त 1930 में बुलाई गई, जिसके आप स्वागत समिति के सदस्य बने। सन् 1932 में गाँधीजी के विलायत से आने के बाद गिरफ्तारियां हुई, इसमें आप बंद कर दिये गये। आपकी नजरबंदी से छात्रों में बैचेनी फैल गई। प्रोफेसर और विद्यार्थियों के प्रयत्न से दिल्ली यूनिवर्सिटी यूनियन स्थापित की गयी। इसका सभापति

आपको ही बनाया गया। क्रांतिकारी साहित्य आदि रखने के अपराध में आपको 6 माह एक बार और जेल जाना पड़ा। इसके बाद आप को देहली से 24 घण्टे बाहर जाने की आज्ञा दी गयी, इस बीच आप गाजियाबाद रहने लगे। प्रतिबंध हट जाने के बाद आप पुनः दिल्ली आ गये।

आपने दिल्ली आकर वकालत प्रारंभ कर दी। इसी दौरान आप के यहाँ रूस व अमेरिका में काम करने वाले शमसोदीन आकर ठहरे। इसी अपराध में पुलिस ने मेरठ केस में आपको फंसाया व निर्दोष साबित होने पर केस खारिज कर दिया गया। देहली में आप ने बिरला मील में हड़ताल करायी व उसे सफल बनाया। बहिन सत्यवती और लार्ड हनुमंत सहाय के साथ मजदूरों के बड़े–बड़े काम किये।

सन् 1936 में आप एक रोग से पीडित हो गये। डॉक्टरों ने सलाह दी कि, आप सूखे क्षेत्र में जाकर विश्राम करें आप जैसलमेर चले गये और वहां पर **चीफ कोर्ट के पद पर काफी समय तक रहे।** आपने कई बार दीवान के जाने पर बहुत ही योग्यता से दीवान के कार्यभार को निभाया और प्रबंध तथा कनूनी मामलों में उच्चकोटि की योग्यता प्रमाणित कर दिखाई।

सन् 1942 के आंदोलन में पुराने कार्यकर्ताओं का पता लगाने की आवश्यकता थी और एक संबंधी के घर से बम बरामद हुए थे जिसके कारण वे गिरफ्तार कर लिये गये। उनसे हुए पत्राचार सी.आई.डी. के हाथ पड़े और पोलिटीकल विभाग ने जैसलमेर रियासत पर जोर डाला कि आपको महत्वपूर्ण पद से हटाया जावे। जिस पर जैसलमेर रियासत की मजबूरी देखकर स्वयं ही अपने पद से त्यागपत्र दे दिया व दिल्ली चले आये।

सन् 1945 में आप पुनः राजनैतिक क्षेत्र में व्यस्त हो गये व कांग्रेस लेफ्टिस्ट ग्रुप बनाया और उसका अध्यक्ष आपको बनाया गयां फार्वर्ड ब्लॉक के वैधानिक हो जाने से सन् 1946 मे आप उसके उप प्रधान बना दिये गये। आप 1935 की सूबा कांग्रेस के प्रधानमंत्री भी रहे।

लेखक की जानकारी में आया कि आप जैसलमेर के स्वतंत्रता सेनानी लालचंद जोशी से परीचित थे और जब आपके दिल्ली लौटने पर जोशीजी दिल्ली आए तो आपने तुरन्त पहिचान कर उनकी आवभगत की। आपके पुत्र पुरूषोत्तमजी लोकसभा सचिवालय में अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं।

पंडित चिरंजीलाल पालीवाल - सेहुद

आपका जन्म क्वारसी 10 संवत् 1964 को सेहुद में पंडित नारायणदासजी के घर हुआ। आपने सन् 1930 में कांग्रेस में सम्मिलित होकर जन सेवा करना प्रारंभ किया। सन् 1933 में कलकत्ता अधिवेशन में जत्थे के साथ सम्मिलित होने गये। किन्तु वहां गिरफ्तार कर लिये गये व इसके अलावा 5 जनवरी, 1941 मे व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया। जिस पर आपको 6 माह का कारावास हुआ और 11 अगस्त, 1942 में आंदोलन में भाग लेने से पुनः गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

आप प्रांतीय कांग्रेस कमेटी व जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य 1938 से 1946 तक रहे। इस प्रकार आपने भी देश की आजादी में बढ़–चढ़कर भाग लिय और अपना संपूर्ण जीवन देश के लिए समर्पित कर दिया।

श्री चिरंजीलाल पालीवाल स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के परिवार की जानकारी भी देना चाहेंगे कि आपके दो पुत्रीयाँ व तीन पुत्र हैं। सबसे बड़ी पुत्री श्री जगदीशचन्द्र जी कोटा को ब्याही गयी। श्री जगदीशचन्द्र जी कोटा का निधन 2 वर्ष पहले हो गया। आपकी पुत्री राजकुमारी 86 साल में ठीक से हैं। श्री हरीकुमार व रामकुमार दिबियापर (उत्तर प्रदेश) निवास करते हैं। छोटे पुत्र श्याम कुमार Asst. Director Agriculture से सेवा मुक्त हो कर कोटा में रह रहे हैं। सबसे छोटी पुत्री चंचल शिकोहाबाद में श्री राकेश पालीवाल को ब्याही गयी। श्री राकेश जी विधायक रह चुके हैं।

पंडित रामनारायण पालीवाल - सलेमपुर

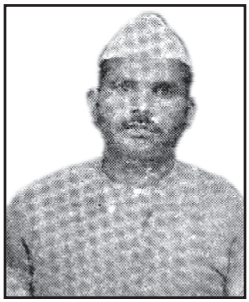

आपका जन्म कार्तिक कृष्णा पक्ष 30 संवत् 1967 में सलेमपुर इटावा में हुआ। आप राष्ट्रीयता के प्रति सन् 1930–32 से ही आकर्षित हुए और सन् 1937 में आप कंग्रेस में सम्मिलित होकर जनसेवा की और अग्रसर हुए और उसी साल आप जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी निर्वाचित किये गये। तब से लेकर आप क्षेत्र की विभिन्न कांग्रेस मण्डल कमेटियों से जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य चुने गये। सन् 1938 से लेकर 1940 तक आप विधान मण्डल कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष व 1942 से लेकर 1946 तक अछलदा मण्डल कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मनोनित किये गये। सन् 1938 में जिला राजनैतिक कांफ्रेस के स्वागताध्यक्ष भी बने।

सन् 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में विधुना तहसील के सर्वप्रथम सत्याग्रही थे। उक्त सत्याग्रह आपने अछलदा में किया। जिसमें आपको 6 माह का परिश्रम कारावास का दण्ड मिला। सन् 1942 के आंदोलन में 15 अगस्त को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। आपको लगभग दो साल बंदी जीवन व्यतीत करना पड़ा किन्तु जेल जाते–जाते आपने अपने भाषण से वह आग फूंक दी जिसके फलस्वरूप अछलदा स्टेशन तोड़ ताला गया व जिसका सुप्रसिद्ध केस फेडरल कोर्ट से छूटा।

आप अपने भीतर एक ऐसा उदार व सहिष्णु व्यक्तित्व छिपाये थे, जिसमें जन समुदाय के प्रति अपनत्व और ममत्व की भावनाभरी पूरी है और यही आपकी सफलता का राज रहा है।

इस प्रकार आपने अपना जीवन राष्ट्रीय आंदोलन में लगाकर देश ही नहीं अपितु संपूर्ण पालीवाल समाज और अपने परिवार का नाम इतिहास में लिख दिया।

स्व. देवदत्त पालीवाल – आगरा

फोटो
उपलब्ध
नहीं

सन् 1942 के राष्ट्रीय आंदोलन के समय आपने कॉलेज की शिक्षा छोड़कर कांग्रेस के राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। सांप्रदायिक दंगों के अवसर पर आपने बड़ी लगन और तत्परता से रक्षा कार्या और देश बंधु सेवा संघ का संचालन किया, जो अभूतपूर्व था। आप छतावार्ड कांग्रेस कमेटी के मंत्री रहे और प्रभावशाली व्यक्तित्व के पराक्रमी, उत्साही और उन्नतीशाली आदर्श के धनी आपने राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में एक कार्यकर्ता के रूप में भाग लेकर समाज का गौरव बढ़ाया।

पंडित माधोनारायण मुद्गल ''भदान''

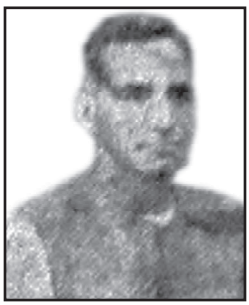

आपका जन्म उत्तर प्रदेश के सहरलायन मैनपुरी में हुआ था। आपके पिता स्व. पंडित ईश्वरदासजी प्रसिद्ध समाज सुधारक थे। आपने सेंट जोन्स कॉलेज आगरा से बी.एस.सी. पास की व आगरा कॉलेज से एल.एल. बी. करके आप मोतीलालजी भदान मैनपुरी के गोद चले गये। आप अपनी योग्यता से मजिस्ट्रेट बने व बाद में आपने देश के राष्ट्रीय आंदोलन में अपनी आवश्यकता समझते हुए मजिस्ट्रेटी छोडकर आंदोलन में कूद पडे और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए जीवन समर्पित कर दिया।

श्री हरनारायण पालीवाल ''धनौली''

आपका जन्म भदेसरा मैनपुरी में हुआ। आपने भी देश के स्वतंत्रता आंदोलन में बढ–चढकर भाग लिया और आप ही नहीं अपितु आपके भाई श्री रूपरामजी व बाबूरामजी भी सपरिवार कई बार जेल गये।

हरियाणा प्रांत के पालीवाल और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन

पालीवाल समाज हमेशा ही राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत रहा है। राष्ट्रीयता की इसी भावना ने हरियाणा के पालीवाल समाज को भी अपने साथ जोड़ लिया।

1. पंडित रामेश्वरदत्त पालीवाल खेवड़ा रोहतक –

इसी कड़ी में हरियाणा पंडित रामेश्वरदत्त पालीवाल राष्ट्रीय कार्यकर्ता रहे हैं। आपका जन्म 1910 में हुआ। सन् 1929 में जब एफ.ए. की परीक्षा दे रहे थे। तभी आपके पिता श्री गोरधनदासजी का देहावसान हो गया। सुहृदों व बंधुओं के कहने पर बी.ए. में दाखिल हो गये, परन्तु कार्य की अधिकता होने से पढ़ाई नहीं हो सकी। कॉलेज जीवन में स्टूडेण्ट कांग्रेस यूनियन के सदस्य रहे और सन् 1931 के आंदोलन में भाग लिया। बाद में घर रहकर कार्य करते रहे और सन् 1940 में नवम्बर से फिर कांग्रेस कमेटी में कार्य करने लगे और आपको तहसील कांग्रेस कमेटी का काम सौंपा गया। अप्रैल में सत्याग्रह किया और लाहौर बोस्टल जेल मे रखे गये। सन् 1942 के आंदोलन में धारा 29 में वारंट निकला, परन्तु यह समस्त तहसील का दौरा करते रहे। 16 सितम्बर को पेट में दर्द होने के कारण घर आ गये और गिरफ्तार कर लिये गये और मुकदमा चला तथा 15 महिने की सख्त सजा हुई। मुकदमें के दौरान 22 दिन हवालात में रहे जिससे स्वास्थ्य खराब हो गया।

सजा काटकर छूटने के बाद पुनः तहसील कांग्रेस कमेटी के प्रधानमंत्री निर्वाचित हुए और वहीं आपने काम किया। जेलयात्रा के समय ही आपकी पत्नि का स्वास्थ्य खराब हो गया और 6 अगस्त, 1947 को देहांत हो गया।

2. पंडित रामप्रसाद पालीवाल–खेवड़ा

पंडित तेजराम मुंधा खेवड़ा के आप तृतीय पुत्र हैं व बाद में मेघराज पालीवाल के गोद चले गये। राष्ट्रीय आंदोलन में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और अपने परिवार नहीं अपितु पालीवाल समाज का गौरव बढ़ाया। आप ने सन् 1940 से ही कांग्रेस का कार्य करते रहे। सन् 1942 के आंदोलन में अम्बाला जेल में रहे और 6 माह की जेल की सजा के बाद रिहा होकर आये

और निरन्तर कांग्रेस कमेटी के माध्यम से सक्रिय रहते हुए राष्ट्र के लिए समर्पित रहे है।

3. पंडित दयाराम पालीवाल–खेवड़ा

सेठ रामलालजी खेवड़ा के सबसे बड़े पुत्र होकर आपने अपनी प्रौढावस्था में सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया और जेल में रहकर अपना जीवन राष्ट्र भक्ति के लिए समर्पित किया और समाज का गौरव बढ़ाया।

4. पंडित सुन्दरलाल पालीवाल

पंडित श्री कृष्णदास पालीवाल जटोला रोहतक के सबसे बड़े पुत्र होकर बहुत ही अनुभवी व्यक्ति थे। आपने हमेशा ही राजनीतिक आंदोलन में भाग लिया। सन् 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आप जेल गये और स्यालकोट जेल में रहे। आप उस समय तहसील कांग्रेस कमेटी के सभापति थे। आपके छोटे भाई मास्टर मदनलाल के देहली स्थित घर में बम शेल आदि मिलने पर मुकदमा चला और सजा हुई। सन् 1942 में उनको पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया व रोहतक जेल में बंद रखा। वहाँ अधिक यंत्रणायें देने से स्वास्थ्य खराब हो गया और घर आकर उनका स्वर्गवास हो गया।

5. मास्टर मदनलाल पालीवाल

पंडित सुन्दरलाल के आप अनुज होकर विद्यार्थी जीवन से ही उत्साही व निर्भिक रहे है और कई आंदोलन में भाग लेकर राष्ट्र की आजादी के लिए समर्पित रहे है। आप अध्यापक होकर कायनौर अम्बाला चले गये। दसवीं परीक्षा में आप स्कूल में प्रथम रहे। आपने एफ.ए. पास किया और दहेली चले आये व रामचन्द्र पालीवाल फिरोजाबाद जो आपके स्वसुर थे उनके द्वारा आपके घर आपत्ति जनक सामान मिलने पर उनको 3 साल की कठिन कारावास की सजा हुई और लाहौर जेल में रहे।

6. पंडित लक्ष्मीदत्त पालीवाल

पंडित सुन्दरलालजी के आप सुपुत्र होकर कक्षा दसवीं पास करने के बाद अपने चाचा के कारावास में होने और अपने पिता की मृत्यु पर पढ़ाई छोड़कर दहेली चले आये। परन्तु यहां भी आप पर मुकदमें चले व पुलिस ने परेशान किया।

पहली बार 17 जनवरी, 1943 को जिला बुलंदशहर में भारत रक्षा

कानून के अंतर्गत धारा 129 में आपको गिरफ्तार कर लिया गया और दो मास 3 दिन की सजा काटने के बाद बिना सबूत रिहा कर दिये गये। दूसरी बार 27 जनवरी, 1945 को भारत रक्षा कानून की धारा 144 तोड़ने पर आपको गिरफ्तार कर लिया गया और एक माह तक जेल में रहने के बाद आपको जमानत पर रिहा किया गया। दो माह बाद पुनः 6 माह की कठोर सजा दी गयी। आठ दिन रहने पर आपको पुनः जमानत पर रिहा किया गया। बाद में सेंशन जज के यहाँ से बरी कर दिये गये। इस प्रकार आपने अपने जीवन को देश की आजादी के आंदोलनों में समर्पित किया और आप सजग कार्यकर्ता, लेखक और परिश्रमी अध्यापक रहे है।

7. पंडित चन्द्रभान पालीवाल – जटोला

पंडित भीखूलाल के सुपुत्र सुन्दरलाल के आप अनुयायी रहे है। सन् 1941 में सत्याग्रह किया और सन् 1942 के आंदोलन में आप गुप्त रहे। आपके अलावा अन्य साथी डॉक्टर किशनलाल पालीवाल नजफगढ़, डॉक्टर छोटेलाल पालीवाल नरेला व गंगासहाय पालीवाल बुवाना ने भी राष्ट्रीय आंदोलन में अपना योगदान देकर पालीवाल समाज का गौरव बढ़ाया है।

8. पंडित ताराचंदजी पालीवाल – अकोला

सन् 1930 से आप कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता होकर राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेते रहे। सावतराम रामप्रसाद मिल अकोला में उंचे ओहदे पर कार्य किया है। अप्रत्यक्ष रूप से आपने 1942 के आंदोलन में काफी मदद पहुंचायी। कांग्रेस को हमेशा तन, मन व धन से मदद किया करते थे। होशंगाबाद में मध्यप्राप्त वरार पालीवाल सभा का अधिवेशन आपकी अध्यक्षता में संपन्न हुआ था।

9. स्वतंत्रता सेनानी पंडित माधोराम पालीवाल

सेठ बुधरामजी पानीपत के आप द्वितीय पुत्र थे। आपने बी.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की। आपने भी सत्याग्रह किया व गुजरात जेल में रहे थे और सन् 1942 में मुलतान जेल में नजरबंद रहे और काफी कष्ट भोगे। आप पानीपत तहसील कांग्रेस कमेटी के प्रधानमंत्री व पंजाब प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी रहे। आपने काफी ख्याती प्राप्त की व उत्साही कार्यकर्ता रहे है।

मेवाड़ (राजस्थान) के पालीवाल और राष्ट्रीय आंदोलन

1. वैद्य पंडित भवानीशंकरजी पुरोहित

आयुर्वेदालंकार, आयुर्वेद शास्त्री के रूप में आपने मेवाड़ प्रजामण्डल की अध्यक्षता करते हुए जेल गये और प्रजामण्डल को आपने प्रत्यक्ष ही नहीं अपितु समय–समय पर तन, मन व धन से भी भरपूर सहयोग किया है।

2. श्री नंदलाल जोशी

आप प्रजामण्डल के कार्यकर्ता रहे है और आपने देश की आजादी के आंदोलन में बढ़–चढ़ कर भाग लिया और कई बार जेल जा जुके है।

3. पंडित शंकरदेवजी भारतीय

आप भी मेवाड़ प्रजामण्डल के सदस्य रहकर राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रहे है। आपने आंदोलन में भाग लेकर दो–तीन बार जेल की सजायें भुगती है।

4. श्री रघुनाथजी जोशी

आप भी प्रजामण्डल के कार्यकर्ता रहकर आजादी के आंदोलन में भाग लिया है और आंदोलन में सक्रिय रहने से आपको भी जेल की सजा काटनी पड़ी।

5. नारायणदासजी बागोरा

श्री रघुनाथजी के साथ आप भी प्रजामण्डल के सदस्य रहे है और आपने खादी आंदोलन में सक्रिस रहकर देश की आजादी के लिए अपना समर्पण किया और जेल की यात्रायें की।

6. श्री राधाकृष्णजी कटारा

आपने भी श्री रघुनाथजी के साथ रहकर प्रजामण्डल के सदस्य रहे है। और आपने आंदोलन में भाग लेकर जेल यात्रा की है।

काव्य श्रद्धांजलि

आजादी के आंदोलन में, जब गांधी ने आह्वान किया।
पूरे भारत की जनता ने, था उसको स्वीकार किया।।
हर प्रांत, जाति और धर्म ने मिलकर, अंग्रेजों पर वार किया।
पालीवाल जाति ने भी, अपना तन–मन–धन था वार दिया।।
पाली–जैसाणा के तप–त्याग ने, जाति इतिहास बनाया था।
स्वाभिमान से जीने की चाह ने, हमको फौलाद बनाया था।।
आजादी के आंदोलन में सत्याग्रह होते रहे।
कैसे चुप रहते, पालीवाल जुड़ते रहे।।
आजादी का रंग चढ़ा कि, अपना सब न्यौछार किया।
अपने वीर सपूतों ने भी, जाति पर उपकार किया।।
उन वीर सपूतों का, करते हैं कोटि–कोटि अभिनंदन।
याद करें वीर सपूतों को, यही होगा उनको श्रद्धा–सुमन।।
आजादी के आंदोलन में जब था, गांधी ने आह्वान किया।
पालीवालों के वीर सपूतों ने, अपना था बलिदान दिया।।
इन वीर सपूतों की यादें, जब–जब हमकों आती हैं।
इनके तप–त्याग को याद कर आंखे भर आती हैं।।
कहे ऋषिदत्त, वीर सपूतों का, हम करें बारंबार वंदन।
धन्य हैं, इनके मात–पिता, हम करते हैं उनका अभिनंदन।।

मेरे सामाजिक सेवा - प्रकल्प

- **सर्वप्रथम लेखक की सोच** पालीवाल समाज की एकता का प्रतीक-चिन्ह **''एक ईंट-एक रूपया''** व पाली परित्याग के दिवस रक्षाबंधन/श्रावणी पूर्णिमा को **''पालीवाल एकता दिवस''** के रूप में समाज द्वारा सहर्ष अंगीकार किया गया।
- पालीवाल इतिहास पर **स्वरचित काव्यगीत** की संगीतमय **ऑडियो कैसेट व डीवीडी** विमोचन 8 फरवरी, 2006 जैसलमेर मुख्यालय पर किया गया।
- IBN7, आजतक न्यूज, जी न्यूज, इंडिया टीवी, न्यूज 18, डिस्कवरी किड्स, ईटीवी राजस्थान आदि मीडिया चेनल पर पालीवाल इतिहास का प्रचार प्रसार।
- राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर व अन्य समाचार पत्रों में पालीवाल इतिहास का प्रमुखता से प्रकाशन।
- गुजरात पालीवाल समाज को अखिल भा.पा.समाज से पहली बार जोड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।
- पालीवाल जागृति संदेश पत्रिका से विगत 25 साल से जुड़े रहकर ऐतिहासिक, सामाजिक जानकारी प्रदान करने व लगभग 8 साल तक संपादन सेवा व वितरण का अवसर।
- जैसलमेर मुख्यालय पर पालीवाल सेवा सदन भूमि आवंटन व निर्माण कार्य का दायित्व पूर्ण किया।

प्रतिक चिन्ह-पालीवाल एकता दिवस

मीडिया चैनल पर पालीवाल इतिहास

समाचार पत्रों में पालीवाल इतिहास

परिचय

नाम	ऋषिदत्त पालीवाल (कुलधर)
पिता का नाम	श्री मोहनलालजी पालीवाल (कुलधर)
माता का नाम	श्रीमती पुष्पादेवी
गौत्र	मुद्गल
उपजाति/नख	कुलधर
कुलदेवी	संच्या माता
मूल गाँव	ग्राम लवां, तह. पोकरण, जिला जैसलमेर ।
जन्म तिथि	4 अक्टूबर,1975
ननिहाल	स्व. श्री रामरतनजी जाजीया (गर्ग गौत्र) कुशालपुरा पाली मारवाड़ ।
शिक्षा	बी.ए., MBA(HR)
व्यवसाय	स्टेनोग्राफर (प्रथमश्रेणी) जिला एवं सेशन न्यायालय, जैसलमेर
सम्मान	• राजस्थान पालीवाल ब्राह्मण समाज संस्थान द्वारा 2006 में **"उत्कृष्ट सेवा"** सम्मान । • हाड़ौती पालीवाल ब्राह्मण समाज द्वारा 2014 में **समाज गौरव** सम्मान ।
गेस्ट राईटर	राजस्थान पत्रिका ।
पदाधिकारी	• पालीवाल ब्राह्मण हितार्थ समिति, जैसलमेर का गठन एवं 15 वर्ष सचिव का दायित्व । • **उपाध्यक्ष,** राजस्थान पालीवाल ब्राह्मण संघ । • **सचिव,** अखिल भारतीय पालीवाल समाज ।
वर्तमान निवास	696ए, स्वामी विवेकानन्द पार्क के सामने, इन्दिरा कॉलोनी, जैसलमेर राजस्थान पिन 345001 मो. 9414391041

मूल्य 65/-